।। ॐ श्री सत्नाम साक्षी ।।

समाचार-पत्र

ई-पेपर

प्रेम प्रकाश सन्देश

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का आध्यात्मिक मासिक समाचार पत्र

15 दिसम्बर 2025 वर्ष 18 अंक 09

कुल पृष्ठ - 32 वार्षिक शुल्क : ₹ 200/- (भारतवर्ष में), ₹ 2000/- (विदेश में), एक प्रति ₹ 20/-

सद्गुरु टेऊँराम अमृतवाणी

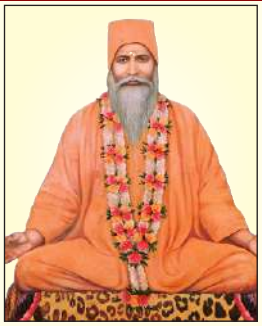

।।रागु भैरव भजनु ।।

जिनिखे नींह निसंगु कयो नेही, तनिजी लोकनि खे कल केही ।। टेक ।।

मूर्ख भूण्ड था दुर्गन्धु चाहिनि, आशिक भंवरा सुगंधु उठाइनि ।

पाणु दिठो जनि पेही ।।1 ।।

मूर्ख बग जिअं मछी चुगनि था, आशिक अहार कनि मोतिनि जा ।

सच खे करे सनेही ।।२।।

बाकरी लालनि मां छा जाणनि, सन्त जवाहरी साफु सुजाणनि ।

थिया सुजागु संझेई ।। ३ ।।

कहे ''टेऊँ'' टिनि लोकनि में जे, सूरज वांगे कीन छिपनि से ।

आहिनि प्रघटु जेई ।।४ ।।

इस प्रेम के विषय पर गुरु महाराज जी ने बहुत से भजन सुना-समझा कर राम-नाम की धुनि लगाकर रात को बारह बजे सत्संग समाप्त किया। प्रसाद लेकर सब लोग विश्रामी हुए।

दूसरे दिन भाई ताराचन्द जी सपरिवार गुरु महाराज जी के शिष्य बने। रात के सत्संग में सत् उपदेश की वार्ता चलाकर गुरु महाराज जी कहने लगे कि यह मनुष्य शरीर भगवान को प्राप्त करने के लिए ही मिला है। क्योंकि मेल-मिलाप में ही सुख समाया हुआ है। वह मिलाप अन्दर व बाहर के भेद से दो प्रकार का बताया गया है। दोनों प्रकार के मिलापों को सब जीव चाहते जरूर हैं परन्तु कर नहीं पाते। कारण यह है कि जो कोई भी मिलाप करना चाहे तो सर्वप्रथम वह अपने निजी स्वार्थ का परित्याग कर दे।

दोहा - मान स्वार्थ छोड़ के, करहो तुम मेलाप।

मान-अपमान पर कभी ध्यान न दें और अपना परम कर्त्तव्य समझ कर समस्त जीवों के सुख की कामना करते हुए अपने हृदय के भावों में सत्यता भर दें। इन उपायों द्वारा बाहर का मिलाप हो सकता है। जीव ब्रह्म की एकता ही अन्तर का मिलाप कहलाती है। यह मिलाप सत् शास्त्रों, सन्तों और पूर्ण सद्गुरु के संसर्ग से ही होता है। उपर्युक्त दोनों मिलाप इस जीव को सुख पहुँचाने वाले बताये गये हैं। इस विषय पर गुरु महाराज जी ने भजन-दोहे आदि बोल कर राम-नाम की धुनि लगा कर सत्संग समाप्त किया। तत्पश्चात् भोजन पाकर जाकर विश्रामी हुए ।

शेष पेज नं. 2 पर...

पेज नं. 1 से आगे...

दूसरे दिन सवेरे गुरु महाराज जी भाई जोधाराम जी के घर गये, वहाँ पर थोड़ी देर सत्संग करके जलपान किया। वहाँ पर जो कुछ भी कपड़े-पैसे भेंट में मिले थे, वे सब के सब गरीब अनाथों में बाँट दिये गये। फिर गुरु महाराज जी तैयार होकर इकतारे आदि वाद्ययन्त्र चढ़ा कर गाते-बजाते गाँव से बाहर निकल कर सब सज्जनों को विदा कर भिरकण गाँव को पधारे। वहाँ के पंचों द्वारा स्वागत सत्कार पाकर भोजन पाकर गुरु महाराज जी आरामी हुए।

सायंकाल को वहाँ पर मुरलीधर आकर प्रणाम कर बैठा। उसे देख कर गुरु महाराज जी पूछने लगे कि बताओ, क्या चोरी छुपे भाग आये हो? यह सुन कर मुरलीधर कहने लगा कि परसों शाम को हमारे सम्बन्धी हम सभी को मारपीट कर घर ले गये थे और वहाँ पर हम सभी को बाँध रखा था। बसन्तराम को भी कोठी में बन्द कर रखा था। आज मेरा भाई भोजन पाकर जब चक के गाँव गया तब मैंने अपनी चाची जी को कहा कि भगवान के नाम पर मुझे खोल दो। अब मैं सन्तों के पास कभी नहीं जाऊँगा। यह सुनकर चाची जी ने मुझे खोल दिया। फिर वहाँ से एक लोटा उठाकर छुप कर सीधा यहाँ चला आया हूँ। अब मैं घर नहीं जाऊँगा। यह सुन कर गुरु महाराज जी कहने लगे कि बड़ों की आज्ञा को मानते हुए अपने घर में रह कर भक्ति करो।

इतने में भाई गोविन्दराम जी ने बताया कि यहाँ पर गाँव के पास ही माई लेसूड़ी का स्थान है, वहाँ दो तीन सन्त निवास करते हैं। आज्ञा हो तो चलें, जंगल में भी घूम-फिर आयें और सन्तों से भी मिल कर आयें। यह सुन कर गुरु महाराज जी कहने लगे कि बहुत अच्छा। फिर सब तैयार हो कर माई लेसूड़ी के स्थान पर गये, वहाँ के सन्तों ने गुरु महाराज जी का सत्कार कर सब को बैठा कर कुशल समाचार पूछा। बात चलते गुरु महाराज जी ने पूछा कि यह तो बताओ कि जिस का यह स्थान है वह माई लेसूड़ी कौन थी? यह सुन कर वहाँ रहने वाले सन्तों ने बताते हुए कहा कि किसी जमाने में कोई वैरागी महात्मा भ्रमण करते हुए यहाँ आया था। वह जो अन्दर लेसूड़ी का पेड़ दिखलाई पड़ता है, वह उस वृक्ष के नीचे बैठ कर भजन किया करता था। भजन के प्रताप से इस स्थान का नाम ही माई लेसूड़ी का स्थान पड़ गया है। हे प्रभु! ये सब आप सत्पुरुषों-महात्माओं की ही महिमा है। जहाँ-जहाँ पर सन्तों के पवित्र चरण पड़ते हैं, वहाँ-वहाँ पर तीर्थ बन जाते हैं। इतना बता कर सब को चटनी-रोटी खिला कर वहाँ के सन्तों ने गुरु महाराज जी को सत्संग सुनाने के लिये प्रार्थना की। यह सुन कर गुरु महाराज जी ने ग्वाललाल, सर्वानन्द व गुरुमुखदास को भजन बोलने की आज्ञा दी। आज्ञा पाकर वे भजन गाने लगे, भजन की आवाज व रस भरी आलाप सुन कर आस-पास के किसान लोग भी खेती के काम को छोड़ कर आकर भजन सुनने लगे। घण्टा भर भंजन के बाद सत्संग समाप्त हुआ।

सब लोग बहुत खुश हुए। फिर वहाँ के सन्तों से विदा लेकर जंगल की सैर करते हुए अपने स्थान पर आये और रात का सत्संग आरम्भ किया गया। सत्संग मण्डप में गाँव व आस-पास के लगभग एक हजार लोग बैठे थे, पहले भगत वाटूराम व भाई चोइथबाल ने छेर, जामा पहन कर भजन बोले। फिर ग्वाललाल, सर्वानन्द व गुरुमुखदास ने मिल कर साजों पर भजन बोले। भजन की आवाज सुन कर और भी हिन्दू-मुसलमान आकर सत्संग सुनने लगे। फिर गुरु महाराज जी भी जो सन्त मण्डल भजन बोल रहा था, उसके साथ-साथ गाने लगे। फिर तो भजन में एक अनोखी बाढ़ सी आ गयी। सारी सभा गुरु महाराज जी की ओर ताकने लगी। जैसे चकोर की नजर चाँद में लग जाती है, वैसे ही सबकी आँखें गुरु महाराज जी में ही लग गयीं। गुरु महाराज जी सत् उपदेश की वार्ता चलाकर निम्नलिखित छन्द बोल कर कहने लगे कि-

छन्द - पूर्व की कमाई तैने, पश्चिम में बैठ खाई, आगरे की खेप सो तो, कभी न चलाइये ।
दिल्ली के दलालों ने, सौदा तो बिगाड़ लीना, पटियाले के लूटने से, जगादरी न पाइये ।।
संगी और साथी तेरे, नित ही लाहोर कहें, सहारनपुर के रस्ते से, हरिद्वार जाइये ।
धूमराय गरीब कहे, तजो वेरवाल सब, चित्त श्री अमृतासर में लगाइये ।।

शेष अगले अंक में...

।। ॐ सत्नाम साक्षी ।।
श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का आध्यात्मिक मुखपत्र

प्रेम प्रकाश सन्देश

15 दिसम्बर 2025

वर्ष 18 | अंक 9

मंगल आशीष

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज
सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज
सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज
सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज

संस्थापक
सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज

संरक्षक–मार्गदर्शक–प्रेरणास्त्रोत
सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज

सदस्यता शुल्क

अवधि	भारत में	विदेश में
एक वर्ष के लिये	₹ 200	₹ 2000
दो वर्ष के लिये	₹ 400	₹ 4000

मनीआर्डर भेजने व पत्र व्यवहार के लिये पता :
व्यवस्थापक, प्रेम प्रकाश सन्देश
प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ,
लश्कर, ग्वालियर-474001 (मध्यप्रदेश)
मोबा. 0751-4045144
सम्पर्क समय : प्रात 8 से 10 बजे तक (तात्कालिक व्यवस्था)
e-mail : premprakashsandesh@gmail.com

Bank Facility

आईडीबीआई बैंक में आप कोर सुविधा/मनी ट्रांसफर के माध्यम से भी निम्न खाते में शुल्क जमा कराके फोन 0751-4045144 पर अथवा व्हाटस् एप नम्बर 8989701236 पर सूचना दे सकते हैं.

A/c 92610010000468
Net Bankig : IFSC: IBKL0000545
Editor Prem Prakash Sandesh, Gwalior

नई सदस्यता अथवा नवीनीकरण के लिये सदस्यता शुल्क आप मनीआर्डर/कोर बैंक माध्यम के अलावा सद्गुरु महाराज जी की यात्रा के समय बुक स्टॉल पर व देश भर के विभिन्न शहरों में हमारे प्रतिनिधियों के पास जमा कर सकते हैं. इसके अलावा परम पावन गुरु धाम श्री अमरापुर दरबार (डिंडु), जयपुर के श्री अमरापुर सत्साहित्य केन्द्र में प्रतिदिन एवं रविवार प्रातः 8 से 12 व प्रत्येक गुरुवार-शनिवार सायं 5 से 8 बजे तक श्री कुमार चन्दनानी, श्री नारायणदास रामचंदानी, श्री निहालचंद तेजनानी व श्री अशोक कुमार पुरसानी के पास जमा किया जा सकता है.

हे नव वर्ष

पल छिन दिवस माह चुपके से जाने कब खो जाते हैं
वर्तमान कब भूत हो गया कहाँ समझ हम पाते हैं
समय कहाँ कोई बाँध सका है बूँदों सा रिस जाता है
रुक न सका कोई भी क्षण हाथों से फिसल ही जाता है
अन्तिम पत्र कलैण्डर का यह भी अब हटने वाला है
नया वर्ष नव सज धज के संग बस आने ही वाला है
नव आशाएँ नई उमँगें मन मे है अपार उल्लास
रहे अधूरे जो भी सपने पूर्ण करोगे है विश्वास
हाथ जोड़ करते अभिनन्दन श्रद्धा सहित नवाए शीश
स्वागत है नव वर्ष तुम्हारा देना सबको शुभ आशीष
विहँस पड़ा नव वर्ष में लेकर आया हूँ अनेक उपहार
कुछ मुस्काने स्वप्न सलोने नव आशाओं के अम्बार
हँसते-खेलते मिलो मुझे सब नाचो और मचाओ धूम
पर न मुझे अपमानित करना स्वयं को भूल नशे में झूम
नया करो कुछ इस कारण अतिरिक्त दिवस एक लाया हूँ
लीप ईयर हूँ तुमसे कुछ आशाएँ लेकर आया हूँ
जो निराश हैं उनमें तुम नव जीवन का संचार करो
निराश्रितों को थामों साधनहीनों के भंडार भरो
खोलो बंद खिड़कियाँ शुद्ध वायु को विचरण करने दो
शिक्षा के प्रकाश को मन में व्याप्त अँधेरा हरने दो
तुम समर्थ कर्मठ हो पूर्ण करोगे न मेरी अभिलाषा
सभी अपेक्षाएँ तुम से हैं समझो संकल्पों की भाषा

अनुक्रमणिका

अनुक्रम	विषय	पृष्ठ
01.	सद्गुरु टेऊँराम अमृतवाणी	1–2
02.	नववर्ष 2026 सन्देश	4
03.	सद्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज की कृपा से सूखी नहर में पानी लहराने लगा	5
04.	मुक्ति के छः साधन (स्वामी सर्वानन्द जी महाराज)	6
05.	राम मिलन का खत (पाती) सद्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज	7
06.	जाकी रही भावना जैसी-प्रभु मूरत देखी तिन तैसी	8–10
07.	सेवा की प्रतिमूर्ति माता गार्गी	11–12
08.	जानने योग्य-प्रेरक प्रसंग	13–15
09.	पर्व व्याख्या-मकर संक्रांति	16–17
10.	प्रेम प्रकाश आश्रम अमदाबाद वार्षिकोत्सव मेला समाचार-चित्र	18
11.	सूरत वार्षिकोत्सव मेला समाचार-चित्र	19–20
12.	श्री अमरापुर स्थान जयपुर कलेण्डर 2026	21
13.	समाचार डायरी	22–26
14.	चैन्नई मेला आमंत्रण	27
15.	श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के मुख्य आयोजन 2026	28
16.	गुरुनाम जप ले भजन	29
17.	अमरापुर गमन	30
18.	व्रत-पर्व-उत्सव	30
19.	पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज एवं संत मण्डली का यात्रा कार्यक्रम	31
20.	ब्रह्मदर्शनी (सिंधीअ में समुझाणी)	32

परम पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज द्वारा नववर्ष 2026 का सन्देश

सद्गुरु टेऊँराम भगवान की कृपा– सूखी नहर में पानी लहराने लगा

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की अद्भुत महिमा

हम आये तव शरण में, राखो हमरी लाज।
कह टेऊँ निज दास लख, करिये पूर्ण काज।।

महापुरुषों संतों सत्पुरुषों की लीलाएँ अलौकिक एवं दिव्यता से भरपूर होती हैं. सत्पुरुष हम सबको सद्कर्म कराते हुए सत्राह की ओर सदैव अग्रसर करते रहते हैं साथ ही हमारे जीवन में उत्पन्न कठिनाईयों का भी सहजता के साथ समाधान करते हैं लेकिन ऐसा तब होता है जब हमारा सबके प्रति सद्भाव हो सबके कल्याण की कामना हमारे भी दिलों में हो तो संत महापुरुष भी परमपिता परमात्मा की ओर से सहायक बनकर उस सद्कार्य को पूरा कराने में सहायक बनते हैं.

सिंध हिंद के महान संत शिरोमणि सर्व ऋद्धियों-सिद्धियों के दाता मंगलमूर्ति आचार्यश्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के पावन जीवन चरितामृत को पठन श्रवण करने से उनकी लीलाओं के बारे में जानकारी मिलती है और हमारा जीवन भी पावन बनता है समय-समय पर सत्मार्ग की प्रेरणा भी मिलती है.

एक बार कार्तिक मास का समय, सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज रतेदेरे गाँव में मना रहे थे तो वहाँ पर कहरनि के मास्टर छाडाराम जी ने अपने गाँव में भी सद्गुरु महाराज जी को चलने की विनयपूर्वक प्रार्थना की. तब पूज्य सद्गुरु महाराज जी ने उनका प्रेमभरा आग्रह सुनकर कहरिन में आने की स्वीकृति दी. कुछ दिन रतेदेरे गाँव में कार्यक्रम करने के पश्चात् कहरनि गाँव में छह दिनों तक पूज्य सद्गुरु महाराज जी ने सत्संग सरिता में यहाँ के लोगों को अमृतरस का पान कराया. सभी भक्तजन गुरुदेव का दर्शन व सत्संग श्रवण करके आनन्दित हुए.

इस गाँव के निवासी खेतिहर थे सबकी खेती बाड़ी हुआ करती थी, इस गाँव में नहर के पानी से ही खेतों में सिंचाई हुआ करती थी कहने का तात्पर्य कि इस गाँव की सिंचाई का मुख्य स्त्रोत नहर का पानी ही था और उक्त नहर में पिछले कई दिनों से पानी वर्षा न होने के कारण सूख गया था जिससे सारे ग्रामवासी एवं समीप के भी अनेक गाँवों के निवासी पानी न होने से अपनी फसलों की सिंचाई नहीं कर पा रहे थे. फसल सूख गई थी. बहुत नुक्सान हो रहा था. इस कारण सभी किसान भाई बहुत दुःखी और परेशान थे.

एक दिन सत्संग सभा में सद्गुरु महाराज जी का स्वागत करते हुए कहरनि गाँव के मुखिया साहब ने पूज्य गुरु महाराज जी से करबद्ध प्रार्थना करते हुए कहा कि उनके गाँव में नहर का पानी नहीं आ रहा है. ऐसा आशीर्वाद दीजिए कि उसमें पर्याप्त पानी आए और आगे इस तरह की कोई तकलीफ़ न हो. सद्गुरु महाराज जी ने उनकी करुणामय प्रार्थना सुनकर कहा- **ईश्वर सब ठीक कर देंगे**- पूज्यश्री ने ओजस्वी वाणी में पल्लव पाया. प्रार्थना की. महापुरुषों की सद्वाणी सार्थक हुई और भरपूर वर्षा हुई.

सद्गुरु महाराज जी की ऐसी महती कृपा हुई कि कुछ दिनों में ही नहर पानी से लबालब हो गई. और बताते हैं कि फिर कभी उस गाँव में पानी की कमी नहीं हुई. वह नहर सदा लबालब रही. चहुँ ओर खुशियाँ छा गईं, सभी ग्रामवासी प्रसन्न होकर गुरुदेव भगवान की जय-जयकार करने लगे.

ऐसे परम पूजनीय सत्पुरुष योगीराज सर्व ऋद्धि सिद्धियों के मालिक सर्व जीवों का कल्याण करने वाले आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के पावन श्रीचरणों में सहस्त्रों नमन-वन्दन!

–साधक, श्री अमरापुर दरबार (डिब्), जयपुर

मुक्ति के छः साधन

(मूलाधार : सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द अमृतवाणी)

मुक्ति का शाब्दिक अर्थ होता है आजादी! पर हम ये आजादी (मुक्ति) किनसे प्राप्त करें? अनन्त जन्मों से चले आ रहे आवागमन के परिचक्र से या अपने देह बन्धन अज्ञान से? क्योंकि मुक्ति मिले बिना किसी को भी शान्ति-सुख की उपलब्धि होने वाली नहीं और विवेकी मनुष्य के लिए ये गुलामी अर्थात् बंधन तो बड़े ही दुःख का कारण है. इसलिए ज्ञानवान् जिज्ञासु महापुरुष सदा इसकी प्राप्ति का कठिन से कठिन प्रयास करते रहते हैं. यहाँ पर मोक्ष की चाहना रखने वालों के लिए संतों महापुरुषों ने कुछ सुगम साधन बतलाये हैं जो कि इस प्रकार हैं. आप भी उन्हें अपने जीवन में धारण कर मानव जीवन के परम लक्ष्य- परम मुक्ति को प्राप्त करें.

त्याग तप सच सादगी, प्रार्थना विश्वास।
ये षट साधन साध के, पाओ पद अविनाश।

ये छः साधन हैं- त्याग, तप, सच, सादगी, प्रार्थना और विश्वास.

जिस जिज्ञासु ने अपने जीवन में इन छः साधनों को धारण कर लिया तो वह बिना परिश्रम किये ही जीवन के अपार दुःखों से मुक्त हो जायेगा. इस जीवन का कोई दुःख-सुख उसको स्पर्श भी नहीं कर पायेगा ; क्योंकि मुक्ति का शुद्ध स्वरूप है- कि वह इस जीवन के प्रत्येक बन्धन से मुक्त हो- जीवनमुक्त महापुरुषों को मिलने वाले मुक्ति के असीम आनन्द को प्राप्त हो शुद्ध आनन्दमय स्वरूप बने. परन्तु ये मुक्ति उसे ही प्राप्त होगी जो इन छः साधनों के अनुरूप अपने जीवन को चलायेगा. अन्य साधनों से उसका मिलना बड़ा कठिन कार्य है. पर इन साधनों के अनुरूप जीवन चलने से पारमार्थिक मुक्ति क्या व्यवहारिक मुक्ति भी अति सुलभ हो जाती है. हम आप सबको एक सुंदर बात बतलाते हैं-

एक बार मैं बैठकर विचार कर रहा था कि हमारा भारत देश तो बहुत बड़ा है और इतने बड़े देश को आजादी कैसे प्राप्त हुई? क्योंकि हमारे देश पर राज करने वाले अंग्रेज लोग कायर नहीं थे, वो भी अत्यधिक शक्ति-सम्पन्न वीर चतुर और कुटिल लोग थे. परन्तु फिर भी उनको हमारा देश छोड़ना पड़ा. और मैंने आज तक के इतिहास में कभी ऐसा नहीं सुना है कि किसी को बिना युद्ध किये ऐसे विजय प्राप्त हुई हो! 'जैसी हम भारत-वासियों को प्राप्त हुई.' हमें अपने भारतीय शास्त्रों में ही अनेक ऐसे उदाहरण मिलेंगे. जैसे महाभारत, रामायण और कार्तिक माहात्म्य में जालंधर कथा के अन्तर्गत- पर सब में एक ही बात सिद्ध होती है कि 'युद्ध किये बिना किसी को भी विजय की प्राप्ति नहीं हो पाई है.' लेकिन यहाँ पर हमारा भारत राष्ट्र एक ऐसा देश रहा जिसे बिना युद्ध किये अंग्रेजों से मुक्ति प्राप्त हुई. इस विजय का सबसे मुख्य कारण थे- महात्मा गांधी. जिनके नेक प्रयासों से हमारे देश को ये आजादी प्राप्त हो सकी. आजादी की ये लड़ाई तो पूर्व से ही तिलक जैसे अनेक महापुरुष करते आ रहे थे पर महात्मा गांधी के इसमें जुड़ते ही अहिंसा का नया रंग-रूप इसमें दिखने लगा. हमें पहले से अधिक कामयाबी मिलने लगी. इस सफलता का सबसे मुख्य कारण रहा- महात्मा गांधी में विद्यमान मुक्ति के ऊपर लिखित छः साधन. जिसे देखकर ये अंग्रेज लोग हैरान हो मन में सोचने लगते थे कि इतने बड़े देश का नेतृत्व करने वाला एक इन्सान कैसे इतनी सादगी से अपना जीवन यापन करता है? इस महापुरुष का जीवन कितना त्यागमय और तपोमय है! वैसे तो अनेक सद्गुण महात्मा गांधी जी में थे पर उनका सबसे अलौकिक गुण था उनका 'सादगीयुक्त संयमी जीवन.' जिसका अंग्रेजों के मन पर गहरा प्रभाव पड़ा और हमें बिना युद्ध किये स्वतंत्रता की प्राप्ति हो सकी.

हमारे पौराणिक ऋषि-मुनियों से महात्मा गांधी ने तो सद्प्रेरणा लेकर अपना जीवन सादगीयुक्त दिव्य बनाया लेकिन तत्कालीन हमारे महापुरुषों यथा : संत कंवरराम साहिब, आचार्यश्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज, जिन्होंने अपने जीवन को सादगीपूर्ण, त्याग-तपस्या से ओजस्वी बनाकर हम जीवों को एक दिव्य प्रकाश से आलोकित किया. आप सबने श्री अमरापुर दरबार पर आचार्यश्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की पोशाकों के दर्शन किये ही होंगे. वे महापुरुष किस प्रकार अपने श्रीअंगों पर खादी के मोटे वस्त्र धारण कर सादगी से अपना जीवनयापन करते थे. किसी भी अन्य पदार्थ की कोई कमी उनके जीवन में नहीं थी पर फिर भी उन्होंने किसी में राग-द्वेष न रखकर वैराग्य वृति को धारण कर अपने जीवन को दिव्य बनाने का महान उपदेश हम सबको अपनी सद्करनी द्वारा दिया ताकि हम भी उनके समान जीवन में सादगी धारण कर अपने जीवन को दिव्य बना सकें.

इस प्रकार इन छः साधनों को जीवन में धारण करने पर जब इतने बड़े राष्ट्र को गुलामी के बंधनों से मुक्ति मिल सकती है तो क्या हमें अपने जन्म-मरण के बन्धन से मुक्ति नहीं मिल पायेगी? 'अवश्य प्राप्त होगी.' बस इसके लिए हमें अपनी सच्ची लगन से पुरुषार्थ कर इन छः साधनों को अपनाना है. ऐसा होने पर सद्गुरु महाराज, परमात्मा हमारे सहायक बन हमको हर बंधन से मुक्त कर देंगे.

संकलन-लेखन : संत जीतूराम प्रेमप्रकाशी

राम मिलन का खत (पाती)

(मूलाधार : सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज अमृतवाणी)

इस जीवन में भौतिक संसाधनों द्वारा क्षणिक सुख तो प्राप्त किया जा सकता है लेकिन उनसे असीम अखण्ड आनन्द का मिलना अति कठिन है ; क्योंकि परमानन्द (परम आनन्द) बाहर से पाये जाने वाला तत्त्व नहीं है. ये प्राप्त होता है महापुरुषों की सन्निधि, गुरुजनों की सेवा व भगवत् भक्ति के द्वारा. श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाचार्य सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने इस भजन के द्वारा उस परम आनन्द को प्राप्त करने के चार मुख्य साधन बतलाये गये हैं-

राग आसा भजन-1

राम मिलन पढ़ पाती, रे तुम पाओ झाती,
मन एकान्ती, होवे शान्ती।। टेक ।।
ताप क्लेशा पाप मिटाओ, सुनकर सन्तनि बाती।।1 ।।
चारों साधन को तुम साधे, ध्यान धरो दिन राती।।2 ।।
सद्गुरु से मिल सम सुख पाओ, भेद भ्रम हरे भ्रान्ती।।3 ।।
कहे टेऊँ हरि सुमरण करके, लख ले अपनी ज़ाती।।4 ।।

(श्री अमरापुर वाणी हिन्दी, पृष्ठ सं. 32)

1. विवेक, 2. वैराग्य, 3. षट् सम्पदा, 4. मुमुक्षता.

1. विवेक : 'ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या' ऐसा जो निश्चय है वही नित्यानित्य वस्तु विवेक कहलाता है.

2. वैराग्य : दर्शन और श्रवणादि के द्वारा मृत्यु-लोक से ब्रह्मलोक पर्यन्त सम्पूर्ण अनित्य भोग पदार्थों में जो घृणा बुद्धि है, वही वैराग्य है.

3. षट् सम्पदा : षट् सम्पदा में ये छः साधन बतलाये गये हैं-

1. शम, 2. दम, 3. श्रद्धा, 4. समाधान, 5. उपरति, 6. तितिक्षा.

4. मुमुक्षता : अहंकार से लेकर देहपर्यन्त जितने भी अज्ञानजनित कल्पित पदार्थ हैं, उनसे निराश हो चित्त में मोक्ष की इच्छा करें ; क्योंकि ब्रह्म की प्राप्ति हो जाने पर संसार के सारे बन्धन स्वतः छूट जाते हैं. इस मुक्ति की कामना को ही महापुरुषों ने मुमुक्षता कहा है.

ये चारों साधन ही एक दूसरे के पूरक हैं. पहले विवेक से वैराग्य उत्पन्न हो, वैराग्य से शम दम आदि के प्रति निष्ठा हो और ये निष्ठा ही मोक्ष को प्रदान करती है. पर ये चारों साधन गुरुदेव की शरण में ही सफल हो पाते हैं. पूरण सत्गुरुदेव ही अपने शिष्य के आँखों में ज्ञान का अँजन (सुरमा/काजल) लगा कर उसे सत्-असत् का ज्ञान करवाते हैं. जिससे शिष्य पारमार्थिक दिव्य दृष्टि को प्राप्त कर अज्ञान से रहित हो शुद्ध चेतन स्वरूप बन जाता है.

सत्गुरु बुद्धि के नैन में डारे अंजन ज्ञान।
कहे टेऊँ तम भ्रम हर दिखलावे भगवान।।

उन महापुरुषों का अनुभव विशाल होता है. वे ही परमात्मा की उस परम सत्ता को सबके समक्ष प्रकट करते हैं. उनके अतिरिक्त कौन है जो हमें उस परमात्मा की पहचान करा सके.

अलख अलख पई दुनिया गोल्हे
आन्दो प्रहलाद फ़क़ीरन फोल्हे।
लेखन मंझ लकीर लुढ़न्दा
विया कई खाक लगाये
आन्दो अलह फ़क़ीर
न त केर अलह जी आक्हं जाणे।।

अतः हे मेरे मन, अगर तू उस अखण्ड व परिपूर्ण "राम" से मिलन करना चाहता है तो संतों की इस पाती (ख़त) में लिखे सन्देश को अपने जीवन में धारण कर उस असीम आनन्द को प्राप्त कर ले.

संकलन : संत जीतूराम प्रेमप्रकाशी

कल्प वृक्ष है आत्मा, कह टेऊँ सब मोंहि। जाकी जैसी भावना, तैसा फल दे तोंहि।।

जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिनि तैसी

भगवान भाव के भूखे हैं, ऊँच-नीच भेद उनके यहाँ नहीं होता है-

"भगवान ऊँच-नीच नहीं देखा करते, भक्ति जहाँ देखते हैं, वहीं ठहर जाते हैं. दासी पुत्र विदुर के यहाँ उन्होंने चावल की कनियाँ खायीं, दैत्य के यहाँ रहकर प्रह्लाद की रक्षा की. कबीर से छिपकर उनके वस्त्र बुन दिया करते थे. सांवता माली के साथ खुरपे से खुरपते थे. नरहरि सुनार के यहाँ सुनारी करते थे. नामा की जना के साथ गोबर बटोरते थे और धर्मा के यहाँ झाड़ते बुहारते और पानी भरते थे. नामा के साथ निःसंकोच होकर भोजन करते और ज्ञानदेव की भीत खींचते थे. सारथी बनकर अर्जुन के घोड़े हाँके और प्रेम से सुदामा के चावल खाये. ग्वालों के यहाँ स्वयं ही गाएँ चरायीं और बलि के द्वार पहरा दिये. एकनाथ का ऋण पटाया और अम्बरीष के लिये गर्भवास भोगा. मीराबाई के लिये विष का प्याला पी गये और दामा जी के देन भरा. गोरा कुम्हार के मटके बनाये, मट्टी ढोयी और नरसी मेहता की हुण्डी सकारी, पुण्डलीक के लिये तो भगवान अभी तक खड़े ही हैं. उनकी लीला धन्य है.

भगवान तो केवल भाव के ही भूखे हैं-

जो भी मुझमें भाव रखकर, आते हैं मेरी शरण,
मेरे और उसके हृदय का, एक रहता तार है।

ऐसी ही एक घटना जनकपुर के गरीब ब्राह्मण बालक प्रयागदास जी की है. जिसने माँ के वचनों पर विश्वास कर माँ सीता जी के बहन के रूप में दर्शन पाए-

जनकपुर के पास एक छोटे-से गाँव में एक गरीब विधवा ब्राह्मणी रहती थी. उसका एक ही बेटा था जिसका नाम था- 'प्रयागदास'. वह गरीब विधवा ब्राह्मणी भिक्षा माँगकर गुज़ारा करती, जो मिल जाता, उसे प्रभु का प्रसाद समझकर पा लेती थी. बेटे को भी वही प्रसाद पिवाकर पालन पोषण करती थी.

श्रावण के महीने में रक्षा बंधन का दिन आया. सभी बहनों ने अपने-अपने भाईयों के हाथों में राखी बाँधी, पर प्रयागदास गरीब था, कौन उसे राखी बाँधे.

सभी होते हैं रिश्तेदार, जबकि ज़र पास होती है।
बिगड़ जाता है गरीबी में, जो रिश्ता खास होता है।।

गरीब को कौन राखी बाँधे. सात वर्ष का प्रयागदास रोने लगा. माँ! मुझे, किसी ने राखी नहीं बाँधी. माँ ने कहा- बेटा, तुम्हारी कोई बहन नहीं है. बालक बोला- जब सभी को हाथ-पाँव-नाक-कान है मुझे भी है फिर सभी को बहन है तो मुझे क्यों नहीं है. अब नन्हें-से बालक को कौन समझाए. तब माँ ने कहा कि बेटा, तुम्हारी भी बहन है. बालक ने कहा- माँ! कहाँ है मेरी बहन? माँ ने कहा- ससुराल में है. बालक ने पूछा- कहाँ है ससुराल? अयोध्या में उसकी ससुराल है.

नैहर मिथिला राज विराजत, अवधपुरी ससुरारी,
फिकर हमें काहे की, स्वामिनी सियाजू हमारी।।

बालक रोते हुए बोला- माँ! मैं अयोध्या जाऊँगा. माँ बोली- अभी नहीं, थोड़ा बड़ा हो जा, फिर मैं ले चलूँगी अयोध्या, पर बालक जिद्द करके बोला, माँ! मैं तो जाऊँगा. माँ ने बहुत समझाया पर बालक के मन में यही भावना रही कि बहन के ससुराल जाऊँ बहन को देखूं और बहनोई से मिलूं. बालक, माँ के कहने पर सो तो गया परन्तु सारी रात वह सो नहीं सका. व्याकुलता से वह सुबह होने की प्रतीक्षा करने लगा. सुबह होते ही उसने अपने मन में वह बात (अयोध्या जाने की) पुनः दोहराई और माँ के जागने से पहिले जाग गया. उसकी माँ के पास केवल दो धुली हुई धोतियाँ थी. एक पहिने थी और दूसरी धोकर सूखने डाल दी थी. इधर बालक ने सोचा कि बहन राखी बाँधेगी, तो उसे कुछ-न-कुछ देना पड़ेगा. यह सोचकर बालक ने वह धोती जो कई जगह से फटी हुई थी, उठाकर बगल में बाँध ली और पैदल अयोध्या जी की ओर चल दिया. शायद यही सोच रहा था-

ले चल अपनी नागरिया- अवध बिहारी सांवरिया,
सरयू के तीर अयोध्या नगरी, संत भरे जहाँ घाघरिया,
अवध बिहारी.....

इसी भावना के साथ बालक जनकपुर से अयोध्या

जी की ओर पैदल चलता जा रहा था. भगवान अपने धाम में जिसको बुलाना चाहें तो कौन रोक सकता है. चलते-चलते बालक थक गया और एक वृक्ष के नीचे सो गया. जागा! सोया तो जंगल में था ओर जागा तो अयोध्या जी में! लोगों से पूछा- यह कौन सा नगर है? लोगों ने बताया, यह अयोध्या नगर है! अरे, मेरी बहन की ससुराल आ गयी. तब सबसे पूछता है, भैया, यहाँ हमारी बहन रहती है, उनका नाम सीता है और हमारे बहनोई का नाम श्रीराम है. उनका मकान बताओ. लोग कहते, यह अयोध्या है, श्री सीताराम जी तो भगवान हैं. यहाँ उनका मंदिर है मकान नहीं ; पर बालक कहता, मुझे मंदिर नहीं मकान चाहिये. मैं अपनी बहन से मिलने आया हूँ, भगवान से नहीं. लोग कहते, पागल है (पर- इन्हीं बिगड़े दिमागों में भरे अमृत के लच्छे हैं, इन्हें पागल ही रहने दो ये पागल ही अच्छे हैं) दिन भर खोजा पर मकान नहीं मिला- फिर मन ही मन बड़बड़ाने लगा- माँ ठीक कहती थी "ये दिन में नहीं मिलेंगे, बड़े आदमी हैं ये कैसे सिद्ध करेंगे कि यह गरीब हमारा रिश्तेदार है, गरीबों के कोई रिश्तेदार नहीं होते. माँ इसलिये मना करती थी मुझे यहाँ नहीं आना चाहिये था. मैं कल ही लौट जाऊँगा." यह कहते-कहते एक वृक्ष के नीचे सो गया- लेकिन रात्रि को अचानक दिव्य प्रकाश हुआ. आँखें चौंधिया गयी, उठकर खड़ा हो गया और उस दिव्य प्रकाश में देखा कि एक हाथी, हाथी पर सोने का होदा और महावत की जगह श्री हनुमान जी, साथ ही होदे पर विराजमान है श्री सीताराम जी, सेवक पीछे पीछे चल रहे हैं. अब यह खड़ा होकर देखने लगा- यह क्या! हाथी रुका, बैठा, सेवकों ने सीढ़ी लगाई, उस सीढ़ी से भगवान श्री सीताराम जी उतरे, महावत श्री हनुमान जी उतरे. बालक यह सब देख ही रहा था कि श्री सीताराम जी पास आकर रुक गये. जब तक बालक समझ पावे, तब तक श्रीराम जी ने कहा- बालक प्रयागदास, यह तुम्हारी बहन सीता है. बालक को लगा यह तो मेरा नाम भी जानते हैं और यह भी बता रहे हैं कि यह मेरी बहन सीता है, पर प्रयागदास बोले कि मुझे नहीं लगता कि यह मेरी बहन है. क्यों! क्या पहिले तुमने कभी अपनी बहन को देखा है? नहीं! पर मैं बहन की पहचान जानता हूँ. क्या पहचान है- "विरह व्यथा से चरणों में, लोट- लोट कर रोती है बहन, जब भाई मिल जाता है." अगर यह मेरी बहन होती तो यूँ चुप-चाप न खड़ी रहती और रोने लगे. जब प्रयागदास जी ने यह बात कही- तब सीया जू "भूल गयी मैया, पर भैया हमें भूले नहीं, सीया के उर भाव पर आता है- रोने लगी सीता और आँसूओं से पग धोने लगी- भाई-भगिनी का भगवान धन्य नाता है." श्री जानकी जी ने प्रयागदास जी को हृदय से लगा लिया. रक्षा बन्धन का दिन है मैं भैया को राखी बाँधूगी. श्री जानकी जी, प्रयागदास के हाथ में राखी बाँधती हैं. प्रयागदास सिर झुकाए आँसू बहा रहे हैं. बहन को कुछ देना चाहिये परन्तु यह सब वैभव देखकर किस की हिम्मत होगी कि वह धोती दे दे लेकिन सिर झुकाकर, आँसू बरसाते हुए प्रयागदास ने वह धोती दे दी, बहन, यह तुम्हारी भेंट! श्री जानकी जी ने आँसू पोंछकर कहा कि भैया मेरी मैया के पास दो ही धोतियाँ हैं. तुम एक ले आए, तो उनके पास एक ही धोती होगी. यह माँ को दे देना और माँ से कहना कि उनकी आशीर्वाद से मैं खूब आनन्द में हूँ. प्रयागदास रोते रहे और जानकी जी भैया को देखकर आँसू बहाती रहीं. थोड़ी ही देर में यह दृश्य, अदृश्य हो गया. प्रयागदास रात भर रोते रहे, नींद नहीं आयी. सबेरे एक महात्मा, जो वशिष्ठ कुण्ड पर ऊपर रहते थे वो आए, उन्होंने जो प्रयागदास को देखा तो समझ गये कि इसे कृपा प्राप्त हुई है. अपने आश्रम पर ले आए. दोपहर को दो देवियाँ स्वर्ण थाल में भोजन लेकर आईं- कहा कि हमारे यहाँ सत्यनारायण की कथा थी उसका प्रसाद है, थोड़ी देर में थाल ले जायेंगे, पर थाल लेने कोई नहीं आया. महात्मा जी समझ गये यह तो किशोरी जी ने अपने भैया की पहुनाई की है. महात्मा जी बोले कि यह थाल तुम घर ले जाओ. बालक ने कहा, बहन का धन, मैं कहीं नहीं लेकर जाऊँगा. इन्हें आप रखें. महात्मा जी बोले, इसे हमें रखने का अधिकार नहीं है. दोनों ने सलाह कर वे दोनों स्वर्ण थाल वसिष्ठ कुण्ड में डाल दिये. प्रयागदास दूसरे दिन ही लौट आए. इधर माँ का रो-रोकर बुरा हाल था. माँ बालक से मिलकर उससे राखी बाँधने की घटना सुनकर मन ही मन किशोरी जी से कह रही थी कि आपने मेरी वाणी की लाज रख ली. तत्पश्चात् बालक प्रयागदास माँ से कह रहे थे कि माँ बहन ने राखी बाँधी और बहुत प्रेम किया लेकिन एक बात तो है माँ!

'पायनि में पनिहीं नहिं इते'
उत भूषण की तन पै छबि छाजी,
जाहि विनीत लिखी धरणी,
तेहि कि भगिनी गजराज ब्राजे।।

बहन हाथी पर बैठकर आई और मैं धरती पर पैदल

घूम रहा हूँ. परन्तु माँ, बहन ने तो दो चार बातें की परन्तु बहनोई जी ने कोई बात नहीं की केवल मुस्कराते रहे.

मान की बात नहीं मन में,
चित्त में इत चोट लगी मोहे माँ जी।
बात कही बहिनी दोइ चार,
बोले नहीं बहनोई मिजाजी।।

यह सुनकर माँ, आँखों में आँसू भरकर कहती रही- कि किशोरी जी आपकी बड़ी कृपा है!

अब तो प्रयागदास का मन होता कि बार-बार बहन के यहाँ जाऊँ. श्री जानकी जी हमारी बहन है, परन्तु माँ समझाती, अभी नहीं. जब वह १५ वर्ष का हुआ तब पता लगा कि वो तो भगवान है. अब तो और व्याकुल होकर माँ से कहता रहा कि, माँ, मैं अयोध्या जाऊँगा. पर माँ कहती रही अभी नहीं- अभी नहीं. कुछ दिन पश्चात् माँ अस्वस्थ हुई, तो भी अवध जाने के लिये छटपटाते रहे.

जब माँ का शरीर शांत हो गया, भोज भण्डारा किया अब परिवार में कोई नहीं रहा, अकेले ही अयोध्या जाने की हठ ठान ली और चल दिया. अयोध्या पहुँचकर एक संत से दीक्षा लेकर शिष्य हुए, नाम हो गया महात्मा प्रयागदास. श्री किशोरी जी को भाव से अपनी बहन मानते थे तो सभी लोग कहने लगे- "मामा" प्रयागदास जी- मामा प्रयागदास जी और हमेशा माला लेकर सीताराम-सीताराम कहते. भगवान की कथा सुनते. एक बार कथा में सुन लिया कि राम जी, वन को चले गये और श्री जानकी जी व लक्ष्मण जी भी गये हैं. इतना सुनकर, बहुत दुःखी होकर बड़बड़ाने लगे, बताओ झगड़ा किस घर में नहीं होता है. ये क्यों चले गये वन में, जबकि उन्हें अयोध्या में ही रहना चाहिये था और हमसे तो पूछते, और साथ में बहन भी चली गयी. अब जो भी मिलता कहते भैया कुछ पैसा दे दो. क्या बताएँ मैंने तो आज तक माँगा नहीं पर वो वन में चले गये हैं, वन में वहाँ उनकी सुख-सुविधा का ख्याल रखना पड़ेगा कि नहीं. लोग प्रसन्न होकर देते. तीन पलंग बनवाए, तीन जोड़े गद्दा-रजाई और तीन जोड़ी जूते. तब पूछते रहे कि ये लोग (राम-लक्ष्मण-जानकी) वन में किधर गये होंगे तब पता लगा कि वो चित्रकूट में हैं. अब प्रयागदास जी सभी सामान सिर पर रखकर पैदल-पैदल चित्रकूट गये. यह है प्रेमियों की भाव दशा! चित्रकूट पहुँचकर श्री मंदाकिनी जी के किनारे सारा सामान रख दिया और कहने लगे, निकल आओ बाहर! हम तुमसे नाराज तो बहुत हैं.

अब कोई बाहर निकले ही नहीं. तब मंदाकिनी पार कर स्वयं ही वन में प्रवेश कर गये. अब इधर उधर देखने लगा. तब राम जी को दया आई और सोचा कि अब यह कहाँ- कहाँ भटकेगा. यह विचार कर श्री सीता, राम, लक्ष्मण जी प्रकट हो गये. तब प्रयागदास जी ने उन्हें प्रणाम किया और आँसू बहाते बोला- यह महल क्यों छोड़कर चले आए, झगड़ा किस घर में नहीं होता. अब मैं यह जूते लाया हूँ, ये जूते पहनो, पलंग पर बैठो. भगवान् बोले- हमारा नियम है, हम सब इन वस्तुओं का उपयोग नहीं कर सकते. इतना सुनकर रोने लगे, तब जानकी जी ने कहा कि प्रभु! यह (प्रयागदास) दुःखी हो गया है आप इन्हें साकेत का दर्शन करा दें. तब भगवान राम जी ने साकेत धाम का दिव्य स्वरूप दिखाया- जहाँ श्री सीताराम जी सिहांसना-सीन थे सभ आनन्द ही आनन्द, यह देखकर बोला- अरे वाह! तुम्हारे तो बड़े ठाठ हैं. लोगों को पागल बना रखा है. (सुनकर भगवान मुस्कराए) यह देखकर मुझे अच्छा तो लगा. अब एक बात बताओ मैंने कभी किसी से कुछ माँगा नहीं. तुम्हारे कारण माँगना पड़ा. अब आप पलंग का उपयोग करो. भगवान बोले- हम नहीं, आप करो. तत्पश्चात् एक जोड़ी जूता पहनकर, प्रणाम करके आ गये.

भाव का भूखा हूँ मैं, बस भाव ही एक सार है।
भाव से मुझको भजे तो, उसका बेड़ा पार है।।
जो भी मुझमें भाव रखकर, आते हैं मेरी शरण।
मेरे और उसके हृदय का एक रहता तार है।।

तात्पर्य यह है कि "जाकी रही भावना जैसी, प्रभू मूरत देखी तिनि तैसी।" अर्थात् जिसकी जैसी दृष्टि होती है- उसे वैसी ही मूरत नज़र आती है. बस भाव का तन्तु जुड़ जाय. माँ के वचनों पर विश्वास- जैसे बालकों को करना चाहिये ; वैसे ही संतों/गुरुजनों के वचनों का विश्वास साधकों को करना चाहिये तो भगवान अवश्य मिलेंगे.

(संकलित)- शंकरलाल सबनानी, ग्वालियर

सत्गुरु टेऊँराम वचनावली : मलिन अन्तःकरण वाले व्यक्ति के हृदय में ऋषि-मुनि, सन्त-गुरु तो क्या परन्तु स्वयं पद्मयोनि ब्रह्मा जी के द्वारा दिया गया ज्ञानोपदेश भी टिक नहीं सकता. अत्युत्तम और अत्यन्त सूक्ष्म आत्म-ज्ञान के लिये तो उज्ज्वल निर्मल, निश्चल और शुद्ध अन्तःकरण की ही आवश्यकता पड़ती है.

सद्गुरु टेऊँराम जीवन चरितामृत से दृष्टान्त

सेवा की प्रतिमूर्ति माता गार्गी

किसी भी दुःखी जीव पर दया करना मानो मुझ पर दया करना है. दया के समान अन्य कोई भी धर्म नहीं है.

सम सन्तोष न और सुख, तप न क्षमा सम जान।
ब्रह्मज्ञान सम दान नहिं, धर्म न दया समान।।

दृष्टान्त : एक समय माता गार्गी, जो कि बहुत ही ज्ञानवान भारतीय नारी हो चुकी है, नारायणसर तीर्थ मेले पर गयी. एक कुतिया भी उनके साथ चली. चलते-चलते एक जंगल में उन्हें रात हो गयी. सभी ने वहाँ विश्राम किया. उस रात उस कुतिया ने बच्चे दिए. माता गार्गी ने सब यात्रियों से कहा, यहाँ करीब एक सप्ताह तक इस कुतिया के लिए रुको. यदि अब हम लोग यहाँ से चलेंगे तो यह बच्चों के मोह के कारण नहीं चल पायेगी. जंगल में ही भोजन पानी के अभाव में यह बच्चों सहित मर जायेगी. यात्रियों ने कहा, हम तो कुतिया को ले नहीं आए हैं जो कि हमें पाप लगेगा. अभी तो नारायणसर तीर्थ सौ, सवा सौ कोस दूर है यात्रा में केवल दस बारह दिन ही शेष बचे हैं. अगर हम यहाँ ठहर जायेंगे तो यात्रा निष्फल हो जायेगी. इसलिए हम तो यहाँ नहीं ठहरेंगे. माता गार्गी ने उनसे कहा, ठीक है, आप मुझे दो-तीन सेर आटा और एक दियासलाई दे दो. मैं एक सप्ताह भर इस कुतिया की सेवा कर, उसे शहर में छोड़कर फिर अगर नारायणसर आयी तो ठीक है नहीं तो वापस लौट जाऊँगी. यात्रियों ने ऐसा ही किया.

माता गार्गी ने उपले (गोबर के कंडे) इकट्ठे किये और आग जलाई, कुएँ से पानी निकालने के लिए उसके पास कोई रस्सी तो थी नहीं अतः वह विचार मग्न हो गयी. उसके मस्तिष्क में एक विचार कौंधा. उसने अपने सिर की जटाएँ खोलकर, सिर के बाल नोच कर, उससे एक रस्सी बनाई. उसके सिर से बहुत ही अधिक खून बहने लगा. परन्तु परोपकार की भावना के कारण बहुत ही प्रसन्न हुई. डोरी बनाकर उसमें एक तौलिया बाँधकर, उसे कुएँ के पानी में डुबोकर, बाहर निकाल कर उसमें से पानी निचोड़ कर निकाला, इस प्रकार से रोटी बनाकर पहले कुतिया को खिलायी और बाद में उन्होंने स्वयं खायी, पानी भी उसे पिलाया.

इसी प्रकार से एक सप्ताह भर कुतिया की सेवा कर, उसे शहर में छोड़कर वह स्वयं शहर के बाहर एक बगीचे में बैठ गयी. मन में विचार करने लगी कल से नारायणसर का मेला शुरू होगा, मैं वहाँ पहुँच तो नहीं पाऊँगी अतः लौट ही जाती हूँ. यह विचार कर, वह वहाँ ही सो गयी. प्रातःकाल चार बजे उन्होंने स्वप्न में भगवान विष्णु को देखा. भगवान ने उससे कहा, आप कोई भी चिन्ता न करें और प्रातःकाल उठकर, आँखें बन्द कर तीन बार मेरा नाम बोलकर, आँखें खोलोगी तो आप मेरे मन्दिर में खड़ी होगी. मैं आपको यह वरदान देता हूँ. इतने में माता गार्गी जाग गयी. उन्होंने चारों ओर देखा परन्तु उन्हें कोई भी दिखायी नहीं दिया.

उन्होंने मन में सोचा, मुझे भगवान ने यहाँ ही दर्शन दिये हैं, परन्तु जैसे उन्होंने कहा है वैसे ही करना चाहिये. प्रातःकाल उसने आँखें बन्द कर तीन बार श्री नारायण का नाम लिया. आँखें खोलकर उन्होंने देखा तो स्वयं को मन्दिर में खड़े पाया, वहाँ भगवान को नमस्कार कर वह बाहर निकली, उन्होंने पूरा मेला घूम कर देखा, मन्दिर की परिक्रमा की और आकर एक टीले पर बैठ गयी. पाँच मिनट के बाद वे यात्री वहाँ आए जो उन्हें जंगल में छोड़कर गये थे. सब लोग उन्हें वहाँ देखकर बहुत ही हैरान हुए. वे माता गार्गी से समाचार पूछने लगे कि आप यहाँ कैसे पहुँची. बिना रस्सी और लोटे के आपने कुएँ से पानी कैसे निकाला होगा. माता गार्गी ने उन्हें सारा वृतान्त कह सुनाया.

सिर की शोभा दूर कर, चीन्हा आत्मराम।
शत कोस नारायणसर, देख दया के काम।।

सिर की शोभा होते हैं बाल, उनको नोच-नोच

कर, निकाल कर, उसकी डोरी बनाकर, कुतिया में भगवान जानकर उन्होंने उसकी सेवा की, उस 'दया' के बदले सौ कोस का फासला, माता गार्गी ने एक मिनट में तय किया और भगवान के दर्शन भी कर लिए. दया में बड़ी ही शक्ति है. हर एक जीव को सब पर दया करनी चाहिए.

अपने आप को भुलाया

दृष्टान्त : एक दिन दस मित्र, आपस में मिलकर रोजगार प्राप्त करने के उद्देश्य से, घर से दूसरे शहर जाने के लिए रवाना हुए. रास्ते में एक बरसाती नदी आयी. उस पर पुलिया का मार्ग पाँच सात मील दूर था. एक दूसरे से पूछताछ करने पर उन्हें मालूम हुआ कि वे दसों मित्र तैरना अच्छी तरह जानते हैं. अतः वे दसों जने कपड़े उतार कर, उन्हें सिर पर बाँध कर नदी में कूद पड़े. नदी पार करने के बाद वे आपस में ही एक दूसरे को गिनने लगे. उन्हें एक जना कम नजर आया. वे बहुत ही उदास हुए परन्तु आगे के लिए कुछ भी विचार न कर सके. फिर उन्होंने कपड़े उतार कर नदी में अपने तथाकथित खोए हुए मित्र की खोज की. खोजते-खोजते उन्हें शाम हो गयी. उन्हें बड़ी चिन्ता सताने लगी.

एक गुरुमुख प्रेमी व्यक्ति वहाँ से गुजरा, उसने उनसे पूछा- आपका क्या गुम हो गया है, जो बड़े ही उदास नजर आते हो और नदी की ओर देख रहे हो. उन मित्रों में से एक ने उस प्रेमी को पूरा वृतान्त कह सुनाया कि वे आपस में कुल दस जने गाँव से निकले थे और एक जना नदी में डूब गया है. पता नहीं कौन डूब गया है, उस प्रेमी ने गिन कर देखा तो उसे वे पूरे दस के दस ही दृष्टिगोचर हुए. उस प्रेमी ने इन मित्रों से कहा, भाई! मैं आपको वह डूबा हुआ मित्र मिला सकता हूँ. सब ने उससे कहा, भैया! यह आपकी बड़ी मेहरबानी होगी. आपकी इस भलाई से हम आजीवन उऋण नहीं हो सकेंगे. तब उस प्रेमी ने सबको पंक्तिबद्ध खड़ा कर, बारी-बारी से उनसे गिनती करवायी. प्रत्येक जना, स्वयं को छोड़कर (स्वयं को गिनती न करके) शेष नौ जनों को गिन रहा था.

तब उस प्रेमी ने उन मित्रों से कहा, अब जैसे मैं बतलाऊँ, वैसे ही गिनती करना. तब उन्होंने उस प्रेमी के कहे अनुसार गिनना शुरू किया. प्रेमी ने उन्हें बतलाया, पहले अपने आपको गिनकर फिर औरों को गिनो. उन्होंने ऐसा ही किया, ऐसा करने से दसों ही जने पूरे दस ही हुए. इस प्रकार से यह जीव भी अपने आपको भूलकर दुःखी हुआ है.

राग जोग भजन

टेक : **जब से अपना आप भुलाया,**
तब से तुमने बहु दुख पाया।।

1. अब तक मूरख तुम नहिं जागे, भोग विषय में अहनिश लागे।
मोह लिया तुमको हरि माया।।
2. पाँच तत्त्व का पहरे चोला, देख इसी को पड़ गया भोला।
निज स्वरूपा नज़र न आया।।
3. कहे टेऊँ कर तेरा मेरा, मन में डाला द्वैत अंधेरा।
अनुभव दीपक नाहिं जगाया।।

एकता में ही सुख और शोभा है

एकता में ही सुख और शोभा है. जिस प्रकार मिट्टी से बनी ईंटें जब आपस में मिलकर एक सुन्दर मन्दिर बना डालती हैं तो वह मन्दिर कितना न शोभायमान लगता है, कितने ही जीव उसमें बैठकर सुख प्राप्त करते हैं परन्तु अगर एक-एक ईंट अलग हो जाये तो कितना बुरा लगता है. मेल-मिलाप में ही शोभा और शक्ति है जैसे कि एक वृक्ष के पत्ते आपस में मिलकर कितनी न सुन्दर छाया उत्पन्न करते हैं और शोभा पाते हैं-

श्लोक : महब्बती मेड़े, शहरु बधिजे हिकिड़ो।
तिन्हीं जे वेड़हे, पाण हीं ईंदो पातशाह।।

दोहा : मान स्वार्थ छोड़के, करहो तुम मेलाप।
कहे टेऊँ आनन्द हो, मिटे सकल संताप।।

अर्थात् जहाँ एकता है वहाँ पर भगवान लक्ष्मी सहित आते हैं. फिर जहाँ भगवान और लक्ष्मी हैं, वहाँ ही सब सुख है. जिन शहरों में मुखियाओं और पंचों का आपस में प्रेम और मिलाप है. वे शहर सदा ही बसते रहते हैं. एकता ही सुख और शान्ति का कारण है.

जानने योग्य

श्री रामचरितमानस में वक्ता-श्रोता युग्म क्यों हैं ?

श्रीरामचरित मानस की रचना में गोस्वामी तुलसीदास जी ने भारतीय शास्त्रीय परम्परा में वर्णित महाकाव्य के सिद्धांतों का समुचित समावेश तो किया ही है, पौराणिक शैली का भी सुंदर समन्वय किया है. इसी का एक प्रमुख उदाहरण है पुराणों की शैली में वक्ता-श्रोता के माध्यम से कथा कहना. जिस तरह पुराणों में एक व्यक्ति कथा कहता है और अन्य कई उसका श्रवण करते हैं, उसी प्रकार तुलसीदास जी ने अपनी रामकथा में वक्ता-श्रोता के कई युग्मों की भाँति मानस में चार युग्म अर्थात् जोड़े मिलते हैं. ये हैं-शिव-पार्वती, याज्ञवलक्य-भरद्वाज, काकभुशुण्डी-गरुड़ और तुलसीदास जी व संत. आशय यह है कि शिवजी पार्वती को कथा सुना रहे हैं, याज्ञवलक्य भरद्वाज को. इसी तरह आगे का क्रम है. इसके माध्यम से पहला युग्म देवताओं का, दूसरा संतों का, तीसरा पक्षियों के माध्यम से प्राणीमात्र का और चौथा तुलसीदास जी के माध्यम से मनुष्यों का है. पहले वक्ता है फिर श्रोता. इस तरह रामकथा का स्वर्ग से धरती तक और पक्षियों के प्रतीक से देवताओं व मनुष्यों के साथ अन्य प्राणियों में भी प्रसार हुआ है. चार युग हैं, चार पुरुषार्थ, चार वर्ण, अतः यह कथा भी चार गुग्मों के माध्यम से कही गई है. शिवजी ने पार्वती को सुनाई, फिर शिव के माध्यम से ही यह काकभुशुण्डी और इनके माध्यम से याज्ञवलक्य तक पहुँची. सार यह है कि कथा को सरस व संप्रेषणीय बनाने के लिए इस वक्ता-श्रोता युग्म शैली को अपनाया गया है. इसका लाभ यह है कि कथा न केवल आसानी से समझ में आती है, बल्कि मूल कथा के साथ आने वाली उपकथाओं का समावेश भी सहजता से ही संभव हो जाता है.

सीता जी को धरती पुत्री क्यों कहते हैं

सीता का अर्थ है हल के फल से खेत में बनी हुई रेखा. खेत जोतने के लिए जिस हल का उपयोग किया जाता है, उसकी नोक को सीत कहते हैं. इसी से सीता शब्द की उत्पत्ति हुई. वाल्मीकि रामायण में जनक जी के माध्यम से सीता की उत्पत्ति की कथा बताई गई है. इसके अनुसार जनक जी जब हल जोतने के लिए गये, तब धरती से सीता जी प्रकट हुईं. इसलिए उन्हें धरती पुत्री कहा जाता है. जनक ने उनका पालन किया. अतः वे जानकी कहलाईं. नेपाल में लखनदेई नदी के पश्चिमी तट पर सीतामणि नामक क्षेत्र में यह स्थान बताया जाता है, जहाँ अकाल पड़ने पर सोने के हल से यज्ञ भूमि जोतने के अवसर पर दिव्य कन्या सीता जी प्रकट हुई थीं. ध्यान रहे रावण वध के बाद सीता जी वाल्मीकि जी के आश्रम में रहीं. यहाँ यज्ञ के अश्व को लेकर श्रीराम की सेना व लव-कुश का युद्ध हुआ और इसके बाद सीता जी धरती में प्रवेश कर गईं.

कृष्ण ने किन परिस्थितियों में देवलोक गमन किया ?

एक बार दुर्वासा ऋषि कृष्ण के पास पहुँचे और आज्ञा दी कि वे जब तक स्नान करके वापस लौटें, तब तक उनके लिए खीर का प्रसाद भोजन के रूप में तैयार कर रखा जाए. भगवान ने ऐसा ही किया. ऋषि ने खीर खाई और थोड़ी सी बची खीर कृष्ण को देते हुए आज्ञा दी कि इससे अपने शरीर पर लेप कर लें. भगवान ने ऐसा ही किया. लेपन के बाद कृष्ण ऋषि के समक्ष आज्ञा पालन की सूचना के निमित्त उपस्थित हुए. ऋषि ने कहा-शरीर के जिस-जिस भाग पर तुमने मेरी झूठी खीर का लेप किया है, वह वज्र के समान हो गया है. केवल पदतल ही शेष रहे हैं. अतः जब भी तुम्हारी मृत्यु होगी, पदतल पर प्रहार से ही होगी. श्रीमद्भागवत पुराण के ११वें स्कंध की कथा के अनुसार यदुवंश का नाश होने के बाद एक दिन भगवान प्रभास क्षेत्र में अकेले पैर पर पैर रखे वृक्ष के तने से सटकर लेटे हुए थे. उनका लाल सुंदर तलवा एक बहेलिए को हिरण के मुख के समान नजर आया. उसने बाण चलाया और भगवान के पदतल से रक्त की धार बह निकली. इस बाण पर लोहे के उसी मूसल का टुकड़ा लगा हुआ था, जिसे यदुवंशियों ने ऋषियों के शाप के बाद चुराकर समुद्र में बहा दिया था. बाण

मारने के बाद बहेलिया कृष्ण के पास पहुँचा और रोते हुए क्षमायाचना करने लगा, लेकिन भगवान मुस्कुराते रहे. अन्ततः उन्होंने अपनी लीला का संवरण कर लिया और अपने धाम चले गये.

द्रोपदी पाँच पतियों की पत्नी कैसे बनी ?

द्रोपदी महाभारत की महत्त्वपूर्ण पात्र हैं. ये पाँचाल नरेश राजा द्रुपद की पुत्री थीं और यज्ञ की वेदी से उत्पन्न हुई थीं. इसी कारण इनका नाम द्रोपदी और पाँचाली के अलावा यज्ञसेनी भी है. द्रोपदी को धनुर्विद्या का श्रेष्ठतम प्रदर्शन कर अर्जुन ने स्वयंवर में हासिल किया था, लेकिन उन्हें पाँचों पाण्डवों की पत्नी बनना पड़ा. इसका कारण यह है कि जब द्रोपदी को लेकर पाण्डव अपनी माता के पास पहुँचे तो कार्य में व्यस्त कुंती ने बिना देखे कहा- जो लेकर आए हैं, उसे मिलकर बाँट लें. इसी कारण द्रोपदी, जिन्होंने अर्जुन का वरण किया था, को सभी भाईयों की पत्नी बनकर रहना पड़ा. महाभारत की एक कथा के अनुसार द्रोपदी ने भगवान शिव से पति के लिए पाँच बार याचना की थी. उन्होंने अपने पति में पाँच गुण चाहे थे. ये सभी गुण एक व्यक्ति में संभव न होने के कारण उन्हें पाँच पतियों की पत्नी बनने का आशीर्वाद मिला था. यहाँ यह भी महत्त्वपूर्ण है कि महाभारत के युग में यह परम्परा थी कि न केवल एक पुरुष एकाधिक स्त्रियों से विवाह कर सकता था, बल्कि एक स्त्री भी एकाधिक पुरुषों से विवाह कर समान रूप से दाम्पत्य जीवन का निर्वहन कर सकती थी. द्रोपदी महाभारत कथा के केन्द्र में होने के कारण इस रूप में चर्चित हो गईं, अन्यथा ऐसे उदाहरण इतिहास में बहुतेरे हैं.

पूजा में धूप का क्या अर्थ और महत्त्व है ?

षोडशोपचार अर्थात् १६ प्रकार से की जाने वाली पूजा में धूप देने की क्रिया प्रमुखता से शामिल है. धूप का अर्थ एक सुगंधित काष्ठ और गंध द्रव्यों का मिश्रण है, जिसे प्रज्ज्वलित करने पर वातावरण सुगंधित होता है. धूपदान अर्थात् धूप को प्रज्ज्वलित करना पूजा में अनिवार्य माना जाता है. भविष्य पुराण में इसका उल्लेख है, जिसके अनुसार सुगंधित पदार्थों के मिश्रण से धूप का निर्माण होता है. इसके निर्माण में दस और आठ प्रकार की वस्तुओं के उपयोग की चर्चा विभिन्न ग्रंथों में आती है. विजय नामक धूप आठ भागों से बनती है. भविष्य पुराण विजय को सर्वश्रेष्ठ धूप निरूपित करता है. इसमें पुष्प, केसर, सुगंधित द्रव्य, लाल चंदन, प्रलेप और मोदक आदि का उपयोग शामिल है. गरुड़ पुराण के अनुसार धूप प्रज्ज्वलित करने से मक्खियों और पिस्सुओं का नाश होता है. इनके निदान के लिए यह रामबाण औषधि कही गई है. बाणभट्ट की कादंबरी में भगवती चंडी के मंदिर में गुग्गल की धूप जलाने का उल्लेख है. सार यह है कि पूजा में धूप-दान से वातावरण सुगंधित होता है और पर्यावरण में शामिल अदृश्य व दृश्य हानिकारक सूक्ष्म जीवों का नाश होता है.

क्या मंथरा का राम से बैर था ?

मंथरा रामकथा की एक महत्त्वपूर्ण पात्र हैं, जो दशरथ की सबसे प्रिय और सुंदर रानी कैकई की दासी थी. मंथरा ने ही कैकई को भड़काया था, जिसके कारण कैकई ने राम के राज्याभिषेक में विघ्न डाल दिया. वाल्मीकि रामायण और श्रीरामचरित मानस सहित रामकथाओं के अन्य संस्करणों में मंथरा का चरित्र और उसकी भूमिका प्रायः एक-सी दी गई है. गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्री रामचरित मानस के अयोध्या कांड में इसके पीछे देवताओं की भूमिका का भी उल्लेख किया है. संदर्भ है कि जब दशरथ ने राम को राजा बनाने का निश्चय किया और अवध में तैयारियाँ शुरू हुईं, तो देवता घबरा गये. उनका उद्देश्य था राम वन में जाएँ, ताकि इस बहाने रावण सहित अन्य राक्षसों का वध हो सके. इसीलिए राम का अवतार हुआ था. लेकिन जब राज्याभिषेक की तैयारी शुरू हुई, तब राम को वन भेजने के उद्देश्य से देवताओं ने ज्ञान की देवी सरस्वती के जरिए कैकई की दासी मंथरा की मति फेर दी. परिणामस्वरूप मंथरा के मन में मोह, लोभ और क्रोध के विकार जन्मे और उसने कैकई को भड़का दिया. मंथरा का राम से बैर तो नहीं था, लेकिन वह तुलसीदास के शब्दों में अपनी एक गलती से सदा के लिए अपयश का पात्र बन गई.

भगवान शिव का प्रिय वाद्य डमरू क्यों है ?

हिन्दू परम्परा के प्रायः सभी प्रमुख देवताओं के स्वरूप में उनके वस्त्र, आभूषण, शस्त्र और वाहनों के अलावा वाद्य का भी समावेश किया गया है. विष्णु जी के साथ शंख, सरस्वती जी के साथ वीणा, कृष्ण के साथ बांसुरी आदि इसी के उदाहरण हैं. भगवान शिव अनादि देवता हैं, अर्थात् न उनका जन्म हुआ, न ही उनके अस्तित्व की कोई शुरूआत है. वे थे, हैं और बस रहेंगे. यही अनादि भाव का अर्थ है. इस अर्थ में भगवान शिव योग, कला, संगीत, ज्ञान आदि की समस्त धाराओं के प्रणेता और प्रेरक हैं. मान्यता है कि संसार में जहाँ जो कुछ भी है, उन सबका मूल उत्सर्ग भगवान शिव ही हैं. इस अर्थ में डमरू उनका प्रिय वाद्य है; क्योंकि यह मूल नाद (स्वर) का प्रतीक है. जिस तरह ओंकार भी नाद है और भगवान शिव से संबद्ध है, उसी तरह डमरू वाद्य के रूप में शिव से जुड़ा हुआ है. इसे आनद्ध वर्ग का वाद्य कहा गया है, जिसे कापालिक भी धारण करते हैं. कहा जाता है कि सुप्रसिद्ध पाणिनीय व्याकरण के प्रारंभिक १४ सूत्र भगवान शंकर के १४ बार किये गये डमरू वादन से ही निकले थे. भगवान की कृपा से महर्षि पाणिनी को यह ध्वनि व्यक्त अक्षरों के रूप में सुनाई दी. आशय यह है कि स्वर का जन्म भगवान शिव के द्वारा ही हुआ है. वे उन्हीं के डमरू से नाद रूप में व्यक्त हुए हैं. इस अर्थ में डमरू अनादि शक्ति के नाद का प्रतीक है.

आध्यात्मिक जानकारी

पखवाड़ा/पक्ष : कृष्ण पक्ष, एवं शुक्ल पक्ष

तीन ऋण : देव, पितृ, एवं ऋषि ऋण

चार युग : सत्युग, त्रेता, द्वापर, एवं कलियुग

चार धाम : द्वारिका, बद्रीनाथ, जगन्नाथपुरी, एवं श्री रामेश्वरम् धाम

चार पीठ : शारदा पीठ (द्वारिका), ज्योतिष मठ (जोशीमठ बद्रीधाम), गोवर्धन पीठ (पुरी), व शृँगेरी मठ (कर्नाटक)

चार वेद : ऋग्वेद, अथर्ववेद, यजुर्वेद, एवं सामवेद

चार आश्रम : ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं संन्यास

चार अन्तःकरण : मन, बुद्धि, चित्त एवं अहंकार

पँच गव्य : गोघृत, दूध, दही, गोमूत्र, एवं गोबर

पँच देव : गणेश, विष्णु, शिव, देवी, एवं सूर्य

पँच तत्त्व : पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, एवं आकाश

छह दर्शन : मीमांसा, न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, एवं वेदान्त

सप्तऋषि : विश्वामित्र, जमदग्नि, भरद्वाज, गौतम, अत्रि, वशिष्ठ, और कश्यप

सप्त पुरी : अयोध्या, मथुरा, मायापुरी (हरिद्वार), काशी (वाराणसी), कांचीपुरी (शिव कांची – विष्णु कांची), अवंतिकापुरी, और द्वारिकापुरी

आठ योग : यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, एवं समाधि

आठ लक्ष्मी : आद्य, विद्या, सौभाग्य, अमृत, काम, सत्य, भोग, एवं योगलक्ष्मी

नवदुर्गा : शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कुष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायिनी, कालरात्रि, महागौरी, एवं सिद्धिदात्री

दस दिशाएँ : पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ईशान, नैऋत्य, वायव्य, अग्नि, आकाश, एवं पाताल

ग्यारह अवतार : मत्स्य, कश्यप, वराह, नरसिंह, वामन, परशुराम, श्रीराम, श्रीकृष्ण, बलराम, बुद्ध, एवं कल्कि अवतार

बारह मास : चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रप्रद, अश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन

बारह ज्योतिर्लिंग : सोमनाथ, मल्लिकार्जुन, महाकाल, ओंकारेश्वर, केदारनाथ, भीमाशंकर, काशी विश्वनाथ, त्रयम्बकेश्वर, बैद्यनाथ, नागेश्वर, रामेश्वरम्, एवं घृष्णेश्वर

बारह राशि : मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ, एवं मीन

प्रन्द्रह तिथियाँ : प्रतिपदा, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी, एवं पूर्णिमा/अमावस्या

स्मृतियाँ : मनु, व्यास, लघु विष्णु, आपस्तम्ब, वसिष्ठ, पाराशर, बहत्पाराशर, अत्रि, लघुशंख, विश्वामित्र, यम, लघु, बृहद्यम, लघु शातातप, वृद्ध शातातप, शातातप, वृद्ध गौतम, बृहस्पति, याज्ञवलक्य, बृहद्योगि याज्ञवलक्य.

पर्व–व्याख्या

मकर–संक्रांति महापर्व

14 जनवरी

सूर्य का मकर राशि में प्रवेश करना 'मकर–संक्रांति' कहलाता है. इसी दिन से सूर्य उत्तरायण हो जाते हैं. शास्त्रों में उत्तरायण की अवधि को देवताओं का दिन तथा दक्षिणायन को देवताओं की रात्रि कहा गया है. इस तरह मकर–संक्रांति एक प्रकार से देवताओं का प्रभातकाल है. इस दिन स्नान, दान, जप, तप, श्राद्ध तथा अनुष्ठान आदि का अत्यधिक महत्त्व है. कहते हैं कि इस अवसर पर किया गया दान सौ गुना होकर प्राप्त होता है.

इस दिन घृत और कम्बल के दान का भी विशेष महत्त्व है. इसका दान करने वाला सम्पूर्ण भोगों को भोगकर मोक्ष को प्राप्त होता है–

माघे मासे महादेव यो दद्याद् घृतकम्बलम्।
स भुक्तवा सकलान् भोगान् अन्ते मोक्षं च विदन्ति।।

मकर–संक्रांति के दिन गंगास्नान तथा गंगातट पर दान की विशेष महिमा है. तीर्थराज प्रयाग एवं गंगासागर का मकर–संक्रांति का पर्वस्नान तो प्रसिद्ध है ही.

उत्तरप्रदेश में इस व्रत को 'खिचड़ी' कहते हैं. इसलिये इस दिन खिचड़ी खाने तथा खिचड़ी–तिल दान देने का विशेष महत्त्व माना गया है. महाराष्ट्र में विवाहित स्त्रियाँ पहली संक्रांति पर तेल, कपास, नमक आदि वस्तुएँ सौभाग्यवती स्त्रियों को प्रदान करती हैं. बंगाल में इस दिन स्नान कर तिल दान करने का विशेष प्रचलन है. दक्षिण भारत में इसे 'पोंगल' कहते हैं. असम में आज के दिन बिहू का त्योहार मनाया जाता है. सिंधी समुदाय में आज के पर्व को 'तिरमूरी' कहते हैं और प्रत्येक परिवार में प्रायः सभी लोग आज प्रातः सूर्योदय के पूर्व स्नान करके दोनों हथेलियों से कच्चे चावल, तिल के लड्डू, तिल की गजक, मूली आदि का दान करते हैं.

राजस्थानी प्रथा के अनुसार इस दिन सौभाग्यवती स्त्रियाँ तिल के लड्डू, घेवर तथा मोतीचूर के लड्डू आदि पर रुपया रखकर वायन के रूप में अपनी सास को प्रणाम कर देती हैं तथा प्रायः किसी भी वस्तु का चौदह की संख्या में संकल्प कर चौदह ब्राह्मणों को दान करती हैं.

इस प्रकार देश के विभिन्न भागों में मकर–संक्रांति पर्व पर विविध परम्पराएँ प्रचलित हैं.

सूर्य किस देवता की आराधना करते है ?

एक बार सृष्टि के रचयिता ब्रह्माजी मुनियों को भगवान सूर्य की महिमा के विषय में बता रहे थे. उसी प्रसंग में उन्होंने बताया कि भगवान् सूर्य एक बार ध्यान में निमग्न थे. इस बात पर मुनियों ने पूछा, 'प्रभो, सूर्य साक्षात् परब्रह्म हैं, परमात्मा, निर्गुण, निराकार है, फिर वे किसका ध्यान करते हैं?'

ब्रह्माजी बोले, 'पूर्व काल में मित्र देवता (सूर्य का एक नाम) ने एक गोपनीय रहस्य नारद जी को बताया था, वही आपको मैं बता रहा हूँ.'

एक समय नारद जी गंधमादन पर्वत के उस क्षेत्र में पहुँचे, जहाँ मित्र देवता तपस्या कर रहे थे. उन्हें तपस्या में संलग्न देखकर नारदजी के मन में कोतुहूल हुआ. वे सोचने लगे, जो अक्षय, अविकारी, सनातन पुरुष है, साक्षात् नारायण हैं, जिन्होंने तीनों लोगों को धारण कर रखा है, वे किस देवता का ध्यान कर रहे हैं. नारद ने कहा, 'भगवन्, सम्पूर्ण वेदों एवं पुराणों में आपकी महिमा का गान किया जाता है. आप अजन्मा, सनातन, धाता तथा उत्तम अधिष्ठान हैं. भूत, भविष्य तथा वर्तमान सब कुछ आपमें ही प्रतिष्ठित है. गृहस्थ आदि चारों आश्रम प्रतिदिन आपका ही भजन करते हैं. आप सबके पिता, माता और सनातन देवता हैं, फिर आप किस देवता की आराधना करते हैं?.'

इस पर मित्रदेवता (सूर्य) बोले, 'ब्रह्मन्! यह परम गोपनीय सनातन रहस्य कहने योग्य तो नहीं है, परन्तु आप भक्त हैं इसलिए यह रहस्य आपको बतलाता हूँ. वह जो सूक्ष्म, अविज्ञेय, अव्यक्त, अचल, ध्रुव, इन्द्रिय रहित, इन्द्रियों के विषयों से परे तथा सम्पूर्ण भूतों से पृथक है, वही समस्त जीवों की अंतरात्मा है. उसकी को क्षेत्रज्ञ भी कहते हैं. उसी का नाम भगवान हिरण्यगर्भ है. वही भगवान सूर्य का अव्यक्त रूप है. वह सम्पूर्ण विश्व की आत्मा, संहारकारी और अक्षर (अविनाशी) है. वह स्वयं शरीर से रहित है, किंतु समस्त शरीरों में निवास करता है. वह सबका साक्षी है, सगुण, निर्गुण, विश्वरूप तथा ज्ञानगम्य है. वह अव्यक्तपुर में शयन करता है, अतः पुरुष कहलाता है. वह बहुत रूपों वाला हे,

इसलिए विश्वरूप कहलाता है. वह परमात्मा सैकड़ों रूपों में अपने को अभिव्यक्त करता है और भक्तों का अनुग्रह करने के लिए अनेक प्रकार की लीलाएँ करता है. संसार के जो चराचर भूत हैं, वे नित्य नहीं, परंतु वह परमात्मा अक्षय तथा सर्वव्यापी कहा जाता है. लोक में देवकार्य तथा पितृकार्य के अवसर पर उसी की पूजा होती है. वह श्रद्धापूर्वक की गयी पूजा को स्वीकार करता है और अभीष्ट मनोरथ तथा सद्गति प्रदान करता है. निर्गुण निराकार होने पर भी वह सगुण साकार रूप धारण करता है. मैं अपने आत्मरूप उसी सूर्य का ध्यान करता हूँ. वर प्रदान करने वाले उस दिवाकर का अर्चन पूजन तथा वंदन सभी को करना चाहिए.' मित्रदेवता से भगवान सूर्य की परब्रह्मता का रहस्य जानकर नारदजी को बड़ी प्रसन्नता हुई और वे भगवद्गुण गाते हुए अन्य लोकों में विचरण करने लगे.

मुनियों को ब्रह्माजी से भगवान सूर्य की लीला कथा सुनकर बड़ी प्रसन्नता हुई.

मौन का महत्त्व बताती है- मौनी अमवास्या

चन्द्रमा और सूर्य दोनों जब मकर राशि में होते हैं, तो मौनी अमावस्या होती है. इस तिथि पर मौन रहकर ऋषि-मुनियों के समान आचरण करने का विशेष महत्त्व है. मौनी अमावस्या योग पर सभी स्थानों का जल गंगातुल्य पवित्र हो जाता है और ब्राह्मण शुद्धात्मा हो जाते हैं. अतः इस योग में दान की हुई थोड़ी-सी सामग्री भी मेरू समान फल देने वाली मानी जाती है.

इसलिए रहें मौन- अमा का अर्थ है करीब और वस्य का अर्थ है रहना. यानी अमावस्या का अर्थ है करीब रहना. इस दिन चंद्रमा दिखाई नहीं देता और तिथियों में इस तिथि के स्वामी पितृ होते हैं. चंद्रमा दिखाई नहीं देने से शरीर में एक महत्त्वपूर्ण तत्व जल का संतुलन ठीक नहीं रहता, जिससे निर्णय सही नहीं हो पाते. इस दिन व्यक्ति में नकारात्मकता आम दिनों की अपेक्षा अधिक होती है. यही कारण है कि इस अमावस्या तिथि पर मौन रहने का बड़ा महत्त्व माना गया है और संयमपूर्वक रहने का विधान है.

अमावस्या को सूर्य चंद्रमा की युति वाणी संयम के लिए भी आवश्यक मानी गई, अर्थात् मौन रहें. यह नहीं हो सके, तो किसी के भी प्रति कटु शब्दों का प्रयोग नहीं करें एवं असत्य भाषा बोलने से बचने का प्रयास करें. वाणी के इस संयम को भी मौन की संज्ञा दी गई है.

थोड़ा संयम रखना भी जरूरी- अमावस्या तिथि होने से चंद्रमा, सूर्य के साथ मकर राशि में होंगे. मकर शनि के स्वामित्व वाली राशि है. सूर्य और चंद्रमा दोनों से शनि शत्रु भाव रखता है. चंद्रमा मन का स्वामी है, उसके शत्रु राशि में होने से मन चंचल होने की आशंका रहती है. इससे स्वयं का अहित होने करने वाले विचार मन में आ सकते हैं. इसलिए यह दिन संयमपूर्वक और मुनियों जैसा बिताने का धर्मशास्त्र आज्ञा करते हैं.

तिल के दान का महत्त्व- इस अमावस्या तिथि पर तिल के दान को भी महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है. सफेद तिल भगवान विष्णु को अतिप्रिय हैं. वहीं काला तिल पितरों के तर्पण में प्रयोग होता हे. अतः इस दिन देवों की तृप्ति के लिए सफेद तिल और पितरों की तृप्ति के लिए काले तिल का दान करना श्रेष्ठकर होता है. साथ ही कपास एवं छतरी का दान करना भी शुभ फल देने वाला होता है. तिल के लड्डू का दान भी कर सकते हैं. इन लड्डुओं का निर्माण घर पर ही स्नान के बाद करना चाहिए.

ऊनी वस्त्रों का दान- इस तिथि पर प्रातः हर हर गंगे का मानसिक जाप करते हुए स्नान कर तिल, तिल के लड्डू, तिल का तेल, आँवला, वस्त्र का दान करना चाहिए. इस दिन जरूरतमंद लोगों को ठंड से बचने के लिए अलाव जलाने की व्यवस्था करनी चाहिए. गरीबों को कंबल, स्वेटर आदि का दान करना चाहिए. किसी गरीब को यदि स्वेटर, कंबल का दान किया जाए, तो राहु एवं शनि की महादशा के बुरे प्रभाव से बचा जा सकता है. इसी दिन अलाव जलवाकर उसका लाभ दूसरों को पहुँचाने से अग्नि देवता प्रसन्न होते हैं साथ ही सूर्य, मंगल और गुरु ग्रह की कृपा प्राप्त होती है.

पितरों को मिलती है शांति- काले तिल के लड्डू बनाकर उसे लाल वस्त्र में बाँधकर ब्राह्मण को दान कराने और भोजन कराने से पितरों को शांति मिलती है. इस दिन श्राद्ध-तर्पण आदि करने का भी बड़ा महत्त्व माना गया है. इस दिन राहु तुला राशि में और केतु मेष राशि में रहेंगे. बृहस्पति को छोड़कर सभी ग्रह राहु-केतु के मध्य ही रहेंगे. इस योग में यदि अमावस्या तिथि हो, तो पितरों के निमित्त एक खाली कांसे के पात्र के साथ एक तांबे के पात्र में दूध, जल, काले तिल, काले वस्त्र, स्वर्ण और गेहूं का दान श्रेयस्कर होता है.

श्री प्रेम प्रकाश आश्रम अमदाबाद का वार्षिकोत्सव धूमधाम से सम्पन्न

अहमदाबाद । श्री प्रेम प्रकाष आश्रम अमदाबाद का वार्षिकोत्सव मेला ४ से ६ दिसम्बर तक परम पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता एवं पूज्य संत मण्डल की उपस्थिति में धूमधाम से मनाया गया । भक्तों द्वारा अपने गुरुवर का बहुत ही धूमधाम से स्वागत-वन्दन किया गया । इस अवसर पर प्रतिदिन प्रातःकाल एवं सायंकालं सत्संग का आयोजन किया गया । प्रातःकाल मूर्तिपूजा-हवन-ध्वजावन्दन का कार्यक्रम हुआ । सत्संग कार्यक्रम में सैकड़ो की संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लेकर अपना जीवन सफल किया ।

सूरत वार्षिकोत्सव मेला सम्पन्न

सूरत । प्रेम प्रकाश मण्डलाचार्य अनन्त श्री सम्पन्न पूज्य सत्गुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज के कृपावंत परम शिष्य वेदांत केसरी पूज्यपाद स्वामी बसंतराम जी महाराज का ४५वां पुण्यतिथि उत्सव प्रेम प्रकाश आश्रम, सूरत में दिनांक ०६ दिसम्बर २०२५ से ०९ दिसम्बर २०२५ तक परम पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज एवं स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज के सान्निध्य एवं पूज्य संत मण्डल की पावन उपस्थिति में धूमधाम से मनाया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत श्रीमद्भगवत् गीता पाठ एवं श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ साहब के पाठों के साथ वर्सी उत्सव की शुरुआत हुई। प्रतिदिन प्रातः ९ बजे से ११.३० बजे तक एवं सायं ५.०० बजे से ८.०० बजे तक विशेष कार्यक्रमों के साथ साथ सत्संग वर्खा की गई । ८ दिसम्बर को प्रातः ६ बजे हरिनाम संकीर्तन प्रभातफेरी निकाली गयी। मंगलवार ९ दिसम्बर को प्रातः ७ बजे से गुरु महाराज जी की विशेष पूजा अर्चना की गई । सुबह ८ बजे से हवन -ध्वजा वंदना का कार्यक्रम आश्रम पर सम्पन्न हुआ । उसके बाद सत्संग पश्चात् श्रीमद्भगवत् गीता के पाठ एवं श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ साहब के पाठों का भोग एवं उसके बाद आम भण्डारे का कार्यक्रम तेरापंथ भवन पर सम्पन्न किया गया। सायंकाल सत्संग सभा के बाद परम पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज द्वारा पल्लव पाकर वर्सी उत्सव का समापन किया गया ।

६ दिसम्बर को श्री पिन्टू सोनी एवं सुमन खेमलाणी द्वारा रंगारंग संगीतमय कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया । रविवार ७ दिसम्बर को सायं ५ बजे से प्रख्यात भजनगायक गोलोकवासी श्री विनोद अग्रवाल जी के सुपुत्र श्री जतिन अग्रवाल जी एवं भागवत वाधवानी द्वारा संगीतमय भजन-कीर्तन की सुन्दर प्रस्तुति हुई ।

प्रेम प्रकाश आश्रम, सूरत वार्षिकोत्सव

भजन – सत्संग

7 दिसंबर, 2025 (रविवार)

नमः टेऊँरामाय ॐ सत्नाम साक्षी नमः सर्वानन्दाय

श्री अमरापुर स्थान

एम.आई.रोड, जयपुर (राज.) फोन : 0141-2372423, 2372424

सद्गुरु टेऊँराम महाराज चालीहा महोत्सव	सद्गुरु टेऊँराम जयन्ती	सद्गुरु सर्वानन्द जयन्ती	प्रेम प्रकाश मण्डल का महाकुम्भ	पुरुषोतम मास (अधिक मास)
9 जून से 19 जुलाई, 2026	19 जुलाई, 2026	24 अक्टूबर, 2026	105 वाँ चैत्र मेला 1 अप्रेल से 5 अप्रेल, 2026	17 मई से 15 जून, 2026

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज	सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज	सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज	सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज
जन्मोत्सव 15 से 19 जुलाई, 2026 वर्सी उत्सव 16 से 20 जून, 2026	जन्मोत्सव 20 से 24 अक्टूबर, 2026 वर्सी उत्सव 14 से 18 अगस्त, 2026	जन्मोत्सव 24 से 28 अगस्त, 2026 वर्सी उत्सव 30 अगस्त, 2026	जन्मोत्सव 27 अप्रेल से 1 मई, 2026 वर्सी उत्सव 3 से 7 सितम्बर, 2026

जनवरी-2026

03	शनिवार	पूर्णिमा
06	मंगलवार	गणेश चतुर्थी
14	बुधवार	मकर संक्रान्ति, षट्तिला एकादशी
18	रविवार	मौनी अमावस्या
20	मंगलवार	चन्द्रदर्शन
23	शुक्रवार	बसन्त पंचमी
24	शनिवार	साईं टेऊँराम चौथ
26	सोमवार	गणतंत्र दिवस
29	गुरुवार	जया एकादशी

फरवरी-2026

01	रविवार	माघी पूर्णिमा
05	गुरुवार	गणेश चतुर्थी
13	शुक्रवार	विजया एकादशी
15	रविवार	महाशिवरात्रि
17	मंगलवार	अमावस्या
18	बुधवार	चन्द्रदर्शन
22	रविवार	सद्गुरु टेऊँराम चौथ
27	शुक्रवार	आमला एकादशी

मार्च-2026

02	सोमवार	होली	
03	मंगलवार	धुलण्डी	
15	रविवार	पाप मोचनी एकादशी	
18	बुधवार	अमावस्या	
19	गुरुवार	नवरात्रा आरम्भ, नवसम्वत्सर-2084	
20	शुक्रवार	चेटीचण्ड	
24	मंगलवार	सद्गुरु टेऊँराम चौथ	
26	गुरुवार	दुर्गाष्टमी	
26	गुरुवार	श्री रामनवमी	
29	रविवार	कामदा एकादशी	

अप्रेल-2026

01 से 05		श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का महाकुम्भ चैत्र मेला, जयपुर
02	गुरुवार	पूर्णिमा/हनुमान जन्मोत्सव
06	सोमवार	गणेश चतुर्थी
13	सोमवार	वरुथिनी एकादशी
17	शुक्रवार	अमावस्या
18	शनिवार	चन्द्रदर्शन
22	बुधवार	सद्गुरु टेऊँराम चौथ
27	सोमवार	मोहिनी एकादशी

मई-2026

01	शुक्रवार	पूर्णिमा/ साईं हरिदासराम जयन्ती
06	बुधवार	गणेश चतुर्थी
13	बुधवार	अपरा एकादशी
16	शनिवार	अमावस्या
18	सोमवार	चन्द्रदर्शन
22	शुक्रवार	सद्गुरु टेऊँराम चौथ
27	बुधवार	कमला एकादशी
31	रविवार	पूर्णिमा

जून-2026

04	गुरुवार	गणेश चतुर्थी
09 जून से 19 जुलाई		सद्गुरु टेऊँराम चालीहा आरम्भ
11	गुरुवार	कमला एकादशी
15	सोमवार	सोमवती अमावस्या
16	मंगलवार	चन्द्रदर्शन
20	शनिवार	सद्गुरु टेऊँराम पुण्यतिथि/ चौथ
25	गुरुवार	निर्जला एकादशी
29	सोमवार	पूर्णिमा

जुलाई-2026

04	शनिवार	गणेश चतुर्थी
11	शनिवार	योगिनी एकादशी
14	मंगलवार	अमावस्या
15	बुधवार	चन्द्रदर्शन
19	रविवार	सद्गुरु टेऊँराम जयन्ती/चौथ/चालीहा पूर्ण
24	शुक्रवार	साईं टेऊँराम छठी उत्सव
25	शनिवार	देवशयनी एकादशी
29	बुधवार	गुरु पूर्णिमा

अगस्त-2026

02	रविवार	गणेश चतुर्थी	
09	रविवार	कामिका एकादशी	
12	बुधवार	अमावस्या	
14	शुक्रवार	चन्द्रदर्शन	
15	शनिवार	स्वतंत्रता दिवस	
17	सोमवार	नाग पंचमी	
18	मंगलवार	सद्गुरु टेऊँराम चौथ/साईं सर्वानन्द वर्सी उत्सव	
19	बुधवार	नही सप्तमी	
20	गुरुवार	साईं सर्वानन्द जल समाधि दिवस	
23	रविवार	पवित्रा एकादशी	
28	शुक्रवार	रक्षाबन्धन/साईं शांतिप्रकाश जयन्ती	
30	रविवार	साईं शांतिप्रकाश पुण्य तिथि	

सितम्बर-2026

01	मंगलवार	गणेश चतुर्थी	
03	गुरुवार	थदड़ी (वर्सी समाई)	
04	शुक्रवार	जन्माष्टमी	
07	सोमवार	अजा एकादशी/	
11	शुक्रवार	अमावस्या	
07		साईं हरिदासराम पुण्य तिथि	
13	रविवार	चन्ददर्शन	
17	गुरुवार	साईं टेऊँराम चौथ	
19	शनिवार	महालक्ष्मी सगरा बुधण	
22	मंगलवार	झलझूलनी एकादशी	
25	शुक्रवार	अनन्त चतुर्दशी (भगवान झूलेलाल अन्तर्धान)	
26	शनिवार	पूर्णिमा / श्राद्ध प्रारम्भ	
29	मंगलवार	गणेश चौथ	

अक्टूबर-2026

03	शनिवार	महालक्ष्मी (सगरा छरेण)	
06	मंगलवार	इन्दिरा एकादशी	
10	शनिवार	सर्वपितृ अमावस्या	
11	रविवार	शारदीय नवरात्रा	
12	सोमवार	असूचण्ड	
16	शुक्रवार	सद्गुरु टेऊँराम चौथ	
19	सोमवार	दुर्गाष्टमी	
20	मंगलवार	विजयादशमी (दशहरा)	
22	गुरुवार	पापकुंशा एकादशी	
24	शनिवार	स्वामी सर्वानन्द जयन्ती	
25	रविवार	शरद पूर्णिमा	
29	गुरुवार	करवा चौथ	

नवम्बर-2026

05	गुरुवार	रमा एकादशी	
06	शुक्रवार	धनतेरस	
07	शनिवार	छोटी दीवाली, नरक चतुर्दशी	
08	रविवार	दीपावली	
09	सोमवार	सोमवती अमावस्या	
10	मंगलवार	गोवर्धन पूजा	
11	बुधवार	चन्ददर्शन, भैयादूज	
15	रविवार	सद्गुरु टेऊँराम चौथ	
17	मंगलवार	गोपाष्टमी	
18	बुधवार	आंवला नवमी	
20-21	शुक्र-शनि	देवउठनी एकादशी, तुलसी विवाह	
24	मंगलवार	पूर्णिमा, देव दीपावली, गुरुनानक जयन्ती	
27	शुक्रवार	गणेश चतुर्थी	

दिसम्बर-2026

04	शुक्रवार	उत्पना एकादशी
08	मंगलवार	अमावस्या
10	गुरुवार	चन्ददर्शन
14	सोमवार	सद्गुरु टेऊँराम चौथ
20	रविवार	मोक्षदा एकादशी/ गीता जयन्ती
23	बुधवार	पूर्णिमा
26	शनिवार	गणेश चतुर्थी

देने वाला साईं टेऊँराम–लेने वाला साईं टेऊँराम

समाचार डायरी

अमदाबाद आश्रम के वार्षिकोत्सव के मध्य अमदाबाद नरोड़ा विधायक (MLA) श्रीमती पायल जी ने श्री प्रेम प्रकाश आश्रम अमदाबाद दरबार में आकर दर्शन कर पूज्य ''गुरु महाराज जी'' एवं संतो से लिया आशीर्वाद...

श्री प्रेम प्रकाश आश्रम सूरत मेले के मध्य प्रख्यात भजन गायक श्री विनोद अग्रवाल जी के सुपुत्र जतिन अग्रवाल जी ने पूज्य ''गुरु महाराज जी'' एवं संतो से लिया आशीर्वाद...

श्री अमरापुर स्थान जयपुर में निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का हुआ आयोजन
300 से अधिक लोग हुए लाभान्वित
निःशुल्क परामर्श के साथ निःशुल्क दवा एवं आंखों की जाँच कर चश्मों का हुआ वितरण

जयपुर। आस्था के पावन केंद्र श्री अमरापुर स्थान जयपुर में श्री अमरापुर सेवा समिति के तत्वधान में निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। शिविर के अंतर्गत डॉक्टरो की निःशुल्क जांच परामर्श सेवा के साथ साथ हड्डी रोग विशेषज्ञ, नेत्र रोग विशेषज्ञ, वरिष्ठ हेल्थ परामर्शदाता आदि की सेवाओं के साथ साथ निःशुल्क दवाई भी वितरित की गई। संतो ने बताया कि विशेषज्ञ डॉ. के परामर्श से जटिल एवं गंभीर बीमारियों का समाधान एक ही स्थान पर सुगम प्रकार से मिल सके! इसलिए इस प्रकार के सेवा शिविरों का आयोजन समय समय पर किया जाता है। शिविर में डॉक्टर सुभाष राजपूत, डॉ. आशा लता, डॉ. संजय, डॉ. राजेश जोगी, एवं समाजसेवी तरुण मेठवानी, रणजीत सिंह सोडाला एवं रुक्मणि अमरवानी साहित स्वनेत्र आई टीम एवं अन्य विशेषज्ञओ द्वारा सेवाएं दी गई। संतो द्वारा सभी को सेवा के क्षेत्र में सदैव इसी प्रकार कार्य करने का आशीर्वाद दिया गया ! सेवा में सदैव अग्रणीय श्री अमरापुर दरबार पर धार्मिक, आर्थिक सेवाओं के साथ, समय समय पर अनेक सामाजिक सेवा कार्य रक्तदान शिविर, मेडिकल कैम्प शिविर, फिजियोथैरेपी, आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक, आदि कैम्प शिविर लगाए जाते है !!!

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला सराह-जिला-कांगड़ा (हिमाचल प्रदेश) में कम्प्यूटर कक्ष (हॉल) का उद्घाटन समारोह

धर्मशाला। रविवार दिनांक २१ दिसम्बर २०२५ को श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष परम पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज के पावन कर कमलों द्वारा राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला सराह-जिला-कांगड़ा (हिमाचल प्रदेश) में कम्प्यूटर कक्ष (हॉल) का उद्घाटन किया गया । इस अवसर पर स्कूल के वार्षिकोत्सव में पूज्य महाराजश्री जी द्वारा माता सरस्वती की पूजा-अर्चना कर पूज्य गुरुजनों के विग्रहों की भी पूजा की गयी । कार्यक्रम में बालक-बालिकाओं द्वारा सुन्दर रंगारंग कार्यक्रमों की प्रस्तुति भी दी गयी । अंत में सभी के लिये भण्डारा प्रसादी की व्यवस्था भी की गयी थी ।

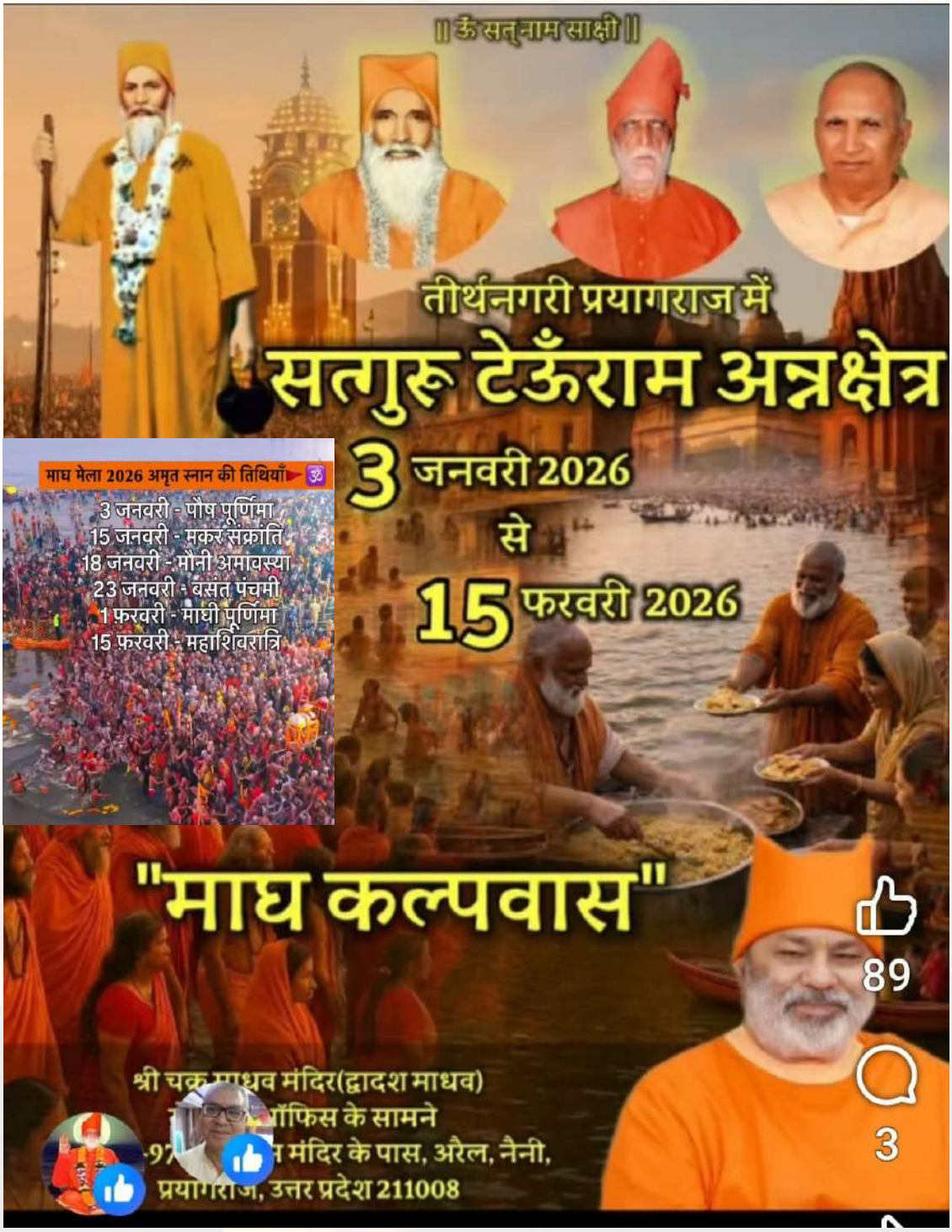
॥ ॐ सत्नाम साक्षी ॥
तीर्थनगरी प्रयागराज में
सतगुरु टेऊँराम अन्नक्षेत्र
3 जनवरी 2026
से
15 फरवरी 2026
माघ मेला 2026 अमृत स्नान की तिथियाँ
3 जनवरी - पौष पूर्णिमा
15 जनवरी - मकर संक्रांति
18 जनवरी - मौनी अमावस्या
23 जनवरी - बसंत पंचमी
1 फ़रवरी - माघी पूर्णिमा
15 फ़रवरी - महाशिवरात्रि
"माघ कल्पवास"
89
3
श्री चक्र माधव मंदिर(द्वादश माधव)
ऑफिस के सामने
मंदिर के पास, अरैल, नैनी,
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश 211008

स्वामी जयमुक्त जी महाराज का 65वां जन्मोत्सव मनाया गया

खैरथल। स्वामी जीवनमुक्त जी महाराज के परम शिष्य स्वामी जयमुक्त जी महाराज का पावन ६५वां जन्मोत्सव श्री प्रेम प्रकाश आश्रम खैरथल में रविवार ३० नवम्बर २०२५ को धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर सायं ४.३० बजे से भजन-सत्संग-जन्म साखी पाठ का कार्यक्रम हुआ उसके बाद दीप प्रज्जवलित कर केक काटकर नाच गाकर बधाई गान हुआ तत्पश्चात् भण्डारा (हथ प्रसादी) वितरण कर कार्यक्रम का समापन किया गया।

आ गया साल देखो ये, फिर इक नया.।

(धुन:-हाल क्या है दिलों का,ना पूछो.)

टिक-टिक करते, बरस ये भी गुजरा तेरा, आ गया साल देखो ये, फिर इक नया,
सेवा-सिमरन किया कितना, इस साल में, मालिक पूछेगा तुमसे, तूँ कुछ तो बता.।

1. हर पल दुनियाँ में मसरूफ, इतना रहा, करने आया था जो, तूनें क्या कुछ किया-2
जब तू लटका था उल्टा, गर्भ माता के-2, वादा करके क्या आया था, सोचो जरा.?
टिक-टिक करते, बरस ये भी गुजरा तेरा, आ गया साल देखो है, फिर इक नया.।

2. स्वाँस इक-इक अमोलक है जाऐ तेरी, ये वक्त गुजरा, नहीं लौट पाऐ कभी-2
गिनती की पाई स्वाँसे, ना भूलो कभी-2, क्यूँ ये अनमोल दौलत, लुटाता रहा,
टिक-टिक करते, बरस ये भी गुजरा तेरा, आ गया साल देखो ये, फिर इक नया.।

3. अब तलक जितना जीवन है, तुमनें जिया, करने लायक कर्म, तूनें कितना किया-2
(सेवा-सिमरन का कारज,है कितना किया) काहे बेकार है वक्त इतना किया-2
हर घड़ी वक्त हाथों से जाता रहा, टिक-टिक करते, बरस ये भी गुजरा तेरा,
आ गया साल देखो ये, फिर इक नया.।

4. आ गया है कलैण्डर ये, फिर इक नया, कह रहा ये, बरस तेरा, पिछला गया-2
जो है बीता,न तू उसका अफसोस कर-2, 'वधवा' स्वागत में सिमरन भी करले जरा,
टिक-टिक करते,बरस पिछला गुजरा तेरा, आ गया साल देखो ये, फिर इक नया,
सेवा-सिमरन किया कितना, इस साल में मालिक पूछेगा तुमसे, तूँ कुछ तो बता.।।

प्रेम प्रकाशी दास हरकेश वधवा
समालखा मण्डी, हरियाणा

ॐ सत्नाम साक्षी

श्री प्रेम प्रकाश आश्रम
चैन्नई का वार्षिकोत्सव
12 से 16 जनवरी, 2026

श्री रामेश्वरम् तीर्थ धाम में
पवित्र समुद्र स्नान व सत्संग सभा समारोह
17 व 18 जनवरी, 2026

ॐ
सत्नाम साक्षी
मंगलमूर्ति आचार्य
सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के आशीर्वाद से

श्री प्रेम प्रकाश आश्रम
चैन्नई का वार्षिकोत्सव
12 से 16 जनवरी, 2026

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की असीम कृपा से श्री प्रेम प्रकाश आश्रम, चैन्नई का वार्षिकोत्सव पूज्य गुरुवर सद्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज के पावन सानिध्य में 12 जनवरी से 16 जनवरी, 2026 तक मनाया जा रहा है। आप सभी भक्त गुरु महाराज जी के सत्संग दर्शन का लाभ लेकर इस मानव जीवन को सफल बनावें।

सेवामें :
संत जीतूराम प्रेमप्रकाशी
श्री प्रेम प्रकाश सेवा मण्डली, चैन्नई

कार्यक्रम

सोमवार 12 जनवरी 2026
प्रातः 8 से 10 : पाठों का शुभारम्भ-सत्संग
सायं 5 से 7.30 : सत्संग - भण्डारा
(प्रेम प्रकाश आश्रम)

मंगलवार 13 जनवरी 2026
प्रातः 8 से 10 : सत्संग-आरती-प्रसाद
सायं 5 से 7.30 : सत्संग - भण्डारा
(प्रेम प्रकाश आश्रम)

बुधवार 14 जनवरी 2026
प्रातः 8 से 10 : सत्संग-आरती-प्रसाद
सायं 5 से 7.30 : सत्संग - भण्डारा
(धर्मप्रकाश कल्याण मंडपम)

गुरुवार 15 जनवरी 2026
प्रातः 7 से 9 : ध्वजावन्दन-हवन
(श्री प्रेम प्रकाश आश्रम)
प्रातः 10 से 12 : सत्संग-भण्डारा
(धर्मप्रकाश कल्याण मंडपम)
सायं 5 से 7.30 : सत्संग - भण्डारा
(धर्मप्रकाश कल्याण मंडपम)

शुक्रवार 16 जनवरी 2026
प्रातः 9 से 12 : सत्संग-भण्डारा-पल्लव
(धर्मप्रकाश कल्याण मंडपम)

जरूरी सूचना : 16 जनवरी प्रातः सत्संग-पल्लव-भण्डारा के पश्चात् सभी श्रद्धालु (धर्मप्रकाश कल्याण मंडपम) से अपनी आगे की यात्रा के लिए सीधे रेल्वे स्टेशन की ओर प्रस्थान करेगें। इससे आपको यात्रा में सुगमता होगी।

ASHRAM ADDRESS :
PREM PRAKASH ASHRAM, PREM PRAKASH BHAWAN,
Old Plot No - 46 & 47 New Plot No - 16 & 17
Opposite - Medplus Medical Store, West Mada Street,
Valluvar Kottam High Rd, Nungambakkam,
Chennai, TamilNadu 600034

अमरापुर से आये है,
श्री सत्गुरु सुखधाम।
सब मिल के दर्शन करो,
पावो सुख विश्राम।।

SATSANG PROGRAMME ADDRESS :
DHARMAPRAKASH KALYANA MANDAPAM
Raja Annamalai Road Kilpauk,
Purasaiwakkam, Chennai, Tamil Nadu 600084

:: IN SERVICE ::
Sant Jeeturam Premprakashi
SHRI PREM SEWA MANDALI, CHENNAI

Contact Person :
Prakash Ji - 9840085161, Naresh Ji - 9841144366, Naveen Ji - 9840166599

।। ॐ श्री सत्नाम साक्षी ।।

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के मुख्य आयोजन 2026

वर्ष 2026 सम्वत् 2082-83

सद्गुरु टेऊँराम जयन्ती
19 जुलाई 2026 (रविवार)

सद्गुरु टेऊँराम पुण्यतिथि
20 जून 2026 (शनिवार)

1 से 5 अप्रैल 2026 - 105वां चैत्र मेला श्री अमरापुर स्थान, जयपुर
24 जुलाई 2026 - शुक्रवार- सद्गुरु टेऊँराम छठी महोत्सव
29 जुलाई 2026 - बुधवार- गुरु पूर्णिमा महोत्सव
11 नवम्बर से 24 नवम्बर 2026 - कार्तिक महोत्सव (प्रभातफेरी)

आचार्य सद्गुरु श्री साईं टेऊँराम जी चालीसा महोत्सव
09 जून से 19 जुलाई 2026 (पूरे विश्व में)

स्वामी सर्वानन्द जयन्ती
24 अक्टूबर 2026 (शनिवार)

सांई सर्वानन्द पुण्यतिथि
18 अगस्त 2026 (मंगलवार)

सांई शान्तिप्रकाश जयन्ती
28 अगस्त 2026 (शुक्रवार)

सांई शान्तिप्रकाश पुण्यतिथि
30 अगस्त 2026 (रविवार)

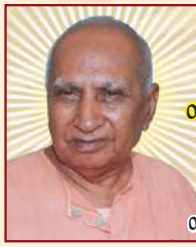

सांई हरिदासराम जयन्ती
01 मई 2026 (शुक्रवार)

सांई हरिदासराम पुण्यतिथि
07 सितम्बर 2026 (सोमवार)

साईं टेऊँराम चौथ -2026 (मासिक जन्म दिवस)

24 जनवरी, शनिवार	22 फरवरी, रविवार	24 मार्च, मंगलवार	22 अप्रेल, बुधवार
22 मई, शुक्रवार	20 जून, शनिवार	19 जुलाई, रविवार	18 अगस्त, मंगलवार
17 सितम्बर, गुरुवार	16 अक्टूबर, शुक्रवार	15 नवम्बर, रविवार	14 दिसम्बर, सोमवार

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का महाकुम्भ 105 वां चैत्र मेला
श्री अमरापुर स्थान जयपुर में
1 अप्रेल से 5 अप्रेल 2026

पुरुषोत्तम मास (अधिक मास) 17 मई से 15 जून 2026

गुरुनाम जपले रे बन्दे.....

धुन:- अखियों को रहने दे, अखियों के आस....

गुरू नाम जपले रे बन्दे, गुरू नाम जपले रे बन्दे, समय कम है तेरे पास.....
नहीं तो चौरासी वाले, नही तो चौरासी वाले, चक्कर तू लेना काट
गुरू नाम जपले रे बन्दे, गुरू नाम जपले रे बन्दे।

1. उसको भरोसा देकर, जग में तू,आया था, उसको भरोसा देकर.....
नाम के सिमरन वाला, वचन निभाया क्या..? नाम के सिमरन वाला.....
नजरें मिलाएगा कैसे, नजरें मिलाऐगा कैसे ? जाकर के उसके पास, नजरें मिलाऐगा कैसे.....
नहीं तो चौरासी वाले, नही तो चौरासी वाले, चक्कर तूँ लेना काट.....
गुरू नाम जपले रे बन्दे, गुरू नाम जपले रे बन्दे।

2. सेवा-सत्संग कर नित,फल की आशा छोड़ के, सेवा-सत्संग कर नित.....
हर-एक स्वाँस अपनी, सिमरन से जोड़ दे, हर इक स्वाँस अपनी.....
मुरली वाला हर-दम तेरे, मुरली वाला हर-दम तेरे, अन्दर करेगा वास, मुरली वाला.....
नहीं तो चौरासी वाले, नही तो चौरासी वाले, चक्कर तू लेना काट.....
गुरू नाम जपले रे बन्दे, गुरू नाम जपले रे बन्दे।

3. गुरू नाम जपने खातिर, रसना तू खोल दे, गुरू नाम जपनें खातिर.....
सतनाम साखी दिल से, एक बारी बोल दे, सतनाम साखी दिल से.....
गुरू नाम सिमरेगा तो, गुरूनाम सिमरेगा तो, किरपा मिलेगी खास, गुरूनाम सिमरेगा.....
नहीं तो चौरासी वाले, नही तो चौरासी वाले, चक्कर तू लेना काट.....
गुरू नाम जपले रे बन्दे,गुरू नाम जपले रे बन्दे।

4. गुरू नाम सिमरन तेरा, जन्म बनाएगा, गुरू नाम सिमरन तेरा.....
बस यही रस्ता भव से पार लगाएगा, बस यही रस्ता भव से.....
सतनाम, साक्षी कहले, सतनाम साखी कहले, कुछ तो जगेगी आस, सतनाम साखी कहले.....
नहीं तो चौरासी वाले, नही तो चौराली वाले, चक्कर तू लेना काट.....
गुरू नाम जपले रे बन्दे ,गुरू नाम जपले रे बन्दे.....॥

प्रेम प्रकाशी दास हरकेश वधवा
समालखा मण्डी, हरियाणा

अमरापुर गमन

श्रीमती कलावंती रोचवानी

जयपुर। गुरुजनों के प्रिय सेवक मनोहरलाल रोचवानी (मास्टर मनु) की माताश्री श्रीमती कलावंती देवी रोचवानी धर्मपत्नि अमरापुरवासी श्री कन्हैयालाल रोचवानी दिनांक १ दिसम्बर २०२५ को आचार्य प्रवर सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के अभय श्रीचरणों में श्री अमरापुर धाम सिधारी। आपका पूरा परिवार गुरु दरबार की सेवा में संलग्न है।

श्री धर्मदास मगनानी जी

जयपुर। श्री धर्मदास मगनानी जी, आयु ७५ वर्ष अपनी जीवन यात्रा पूर्ण कर दिनांक २१ नवम्बर २०२५ को इस नश्वर देह का परित्याग कर श्री अमरापुर धाम सिधारे।

श्री प्रेम प्रकाश मंडलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर सद्गुरु स्वामी श्री भगत प्रकाश जी महाराज एवं संत मंडली द्वारा दिवंगत आत्माओं को अमरापुर लोक में अपनी चरण-शरण में रखने हेतु आचार्य सत्गुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज व प्रभु परमात्मा से पल्लव पाकर प्रार्थना की गई।

व्रत-पर्व-उत्सव

15 दिसम्बर 2025–सोमवार– एकादशी
19 दिसम्बर 2025– शुक्रवार– अमावस्या
21 दिसम्बर 2025– रविवार– चन्द्र दर्शन
25 दिसम्बर 2025– गुरुवार– चौथ (मंगलमूर्ति सत्गुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज का मासिक अवतरण दिवस)
31 दिसम्बर 2025–बुधवार– एकादशी
01 जनवरी 2026– गुरुवार– नववर्ष
03 जनवरी 2026–शनिवार– पूर्णिमा
06 जनवरी 2026–मंगलवार– गणेश चर्तुर्थी
14 जनवरी 2026–बुधवार– मकर संक्रांति, एकादशी
18 जनवरी 2026– रविवार– मौनी अमावस्या
20 जनवरी 2026– मंगलवार– चन्द्र दर्शन
23 जनवरी 2026–शुक्रवार– बंसत पंचमी, सरस्वती पूजा
24 जनवरी 2026– शनिवार– चौथ (मंगलमूर्ति सत्गुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज का मासिक अवतरण दिवस)
26 जनवरी 2026–सोमवार– गणतंत्र दिवस
29 जनवरी 2026–गुरुवार– एकादशी

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर
सत्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज
का यात्रा कार्यक्रम दिसम्बर 2025 से फरवरी 2026 तक

23–24 दिसम्बर 2025	दिल्ली
25 दिसम्बर 2025	भोपाल
26–27–28 दिसम्बर 2025	उज्जैन-इन्दौर
29 दिसम्बर 2025	मुम्बई
30 दिसम्बर 2025	उल्हासनगर
31 दिसम्बर 2025	मुम्बई
01 से 03 जनवरी 2026	मुम्बई
04 से 05 जनवरी 2026	लोनावाला
06 से 07 जनवरी 2026	पिम्परी, अहमदनगर (अहिल्या नगर)
08 जनवरी 2026	यात्रा
09 से 13 जनवरी 2026	मनीला (विदेश यात्रा)
14 जनवरी 2026	यात्रा
15 से 16 जनवरी 2026	चैन्नई
17 से 19 जनवरी 2026	श्री रामेश्वरम धाम
20 जनवरी 2026	यात्रा
21–22 जनवरी 2026	हरिद्वार
23–24–25 जनवरी 2026	जयपुर
26 जनवरी 2026	यात्रा
27 से 30 जनवरी 2026	अमरावती व नासिक आदि
31 जनवरी 2026	दिल्ली
01 फरवरी 2026	भरतपुर
02–03 फरवरी 2026	अलीगढ़
04 से 07 फरवरी 2026	आगरा
08–09 फरवरी 2026	मुरैना
10–11 फरवरी 2026	डबरा
12 फरवरी 2026	झांसी-दतिया
13 से 16 फरवरी 2026	ग्वालियर
17–18 फरवरी 2026	अनिर्णीत
19 फरवरी 2026	यात्रा
20 से 23 फरवरी 2026	दुबई
24 फरवरी 2026	यात्रा

डाक पंजीकृत संख्या ग्वालियर/40020293/2020-22
रजि० समाचार पत्र-रजि० नं० MP/Hindi/2008/25627

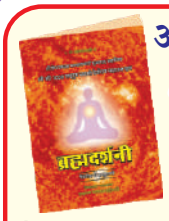

आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज द्वारा रचियलु

'ब्रह्मदर्शनी'

सिंधीअ में समुझाणी

-प्रो. लछमण परसराम हर्दवाणी (पुणे)

पोएं नवम्बर २०२५ अंक खां अगिते- **।। दशपदी - 18 ।।**

प्राण रक्षा हित भोजन भुंचे, अधिक स्वाद को तृष्णा मुंचे।
इन्द्रिय राखहिं निज आधीना, मन के फुरने हरहिं मलीना।
स्वस्थ शरीर रखहिं हर काला, कुटुम्ब मोह से होय निराला।
वेद विहित करहैं व्यवहारा, निषिद्ध कर्म से करहिं किनारा।
सदाचार के निश्चल नियमी, कह टेऊँ सो जाने संयमी।। 10 ।।

संजमी (संयमी) मनुष जे विशेषताउनि जो वर्णनु सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज जनि हिन रीति कयो आहे- "जेको पंहिंजे प्राणनि जी रक्षा करण लाइ ई, जीअण लाइ ई भोजनु/खाधो खाए थो ; जेको वधीक स्वाद जी तृष्ना खे त्यागे थो छडे; जेको पंहिंजे इंद्रियुनि खे पंहिंजे वस में थो रखे; जेको पंहिंजे मन जा मलीनु फुरिणा (संदेह, शक, भ्रम) दूरि थो करे छडे ; जेको पंहिंजे शरीरनि खे सभिनी कालनि/समयनि में स्वस्थ/निरोगी थो रखे ; जेको पंहिंजे कुटुंब-परिवार जे मोह खां अलगि, परे थो रहे ; जेको वेदनि जे चवण अनुसार हलति हले थो; निषिद्ध/मना कयल कर्मनि खां, न करण जहिड़नि कर्मनि खां किनारो थो करे, जेको सदाचार/सुठे आचरण जा नियम अटलता सां पाले थो, अहिड़ो मनुषु संजमी आहे."

संयम/संजम जो अर्थु आहे- इंद्रिय-निग्रह, रोक, बंधन, चित्त-वृत्तियुनि जो निरोधु. मन जे इंद्रियुनि खे पंहिंजे वस में रखण वारे खे 'संयमी'/'संजमी' चयो वेंदो आहे. अहिड़ो मनुषु परहेज़गारु हूंदो आहे ; का ग़ाल्हि हद खां वधीक न करण वारो हूंदो आहे. मनुष जी जीवनचर्या संयम वारी हुअणु खपे ; ग़ाल्हाइण, खाइणु-पीअणु, व्यायाम आदि में संयमु ज़रूरी आहे, न त सरीरु डही पवंदो. तंहिंकरे का ग़ाल्हि हद खां वधीक करे पंहिंजी शक्ती अजाई विञाइणु न घुरिजे. नियंत्रित/क़ब्ज़े में हूंदड़ जीवन जो आधारु संयमु आहे. इन द्वारां मनुष जूं सभई शक्तियूं हिक केन्द्र में रहंदियूं आहिनि, जिनि खे किथे बि लगाइण सां सुठो फलु मिले थो. संसार जा सभई पदार्थ भोग लाइ हूंदा आहिनि. पर इन्हनि जी बि हिक सीमा हूंदी आहे. वधीक खाइण सां शरीर में अनेक समस्याऊं पैदा थियनि थियूं. पेट जे शक्तीअ अनुसार खाइणु ज़रूरी आहे. निरोगी जीवनु जीअण लाइ स्वस्थ शरीर, साफ़ मन ऐं पवित्र बुद्धिअ जी रचना ज़रूरी हूंदी आहे. इन्हनि टिन्ही अवस्थाउनि जे नियंत्रण, ज़ाब्ते खे ई ऋषी ऐं मुनियुनि 'संयम' चयो आहे. संयमी पुरुष जो इन्हनि टिन्ही ते ज़ाब्तो हूंदो आहे.

(हलदंडु)

सूचना

समस्त सम्माननीय सदस्यों के सूचनार्थ उनके प्रेषण पते के ऊपर सदस्यता क्रमांक रसीद संख्या व शुल्क अवधि लिखी हुई है, शुल्क अवधि समाप्त होने की सूचना को आपके पते के ऊपर **LAST COPY** लिखकर उसे **BOLD** करके दर्शाया गया है. पत्रिका की निरंतर प्राप्ति के लिये अपनी सदस्यता का नवीनीकरण सदस्यों को यथाशीघ्र करा लेना चाहिए.

– व्यवस्थापक

किसी कारणवश वितरण न होने पर निम्न पते पर वापस करें-

सम्पादक, प्रेम प्रकाश सन्देश
प्रेम प्रकाश आश्रम,
गाढ़वे की गोठ, लश्कर,
ग्वालियर 474001 (म.प्र.)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक : संतोष पंजवानी द्वारा मुद्रक : सुनील पंजवानी, सन्नी प्रिन्टर्स, मामा का बाजार, लश्कर, ग्वालियर से मुद्रित करवाकर, 401-झूलेलाल अपार्टमेंट, कृष्णा एन्क्लेव,समाधिया कॉलोनी,तारागंज, लश्कर, ग्वालियर-474001 से प्रकाशित किया गया।

कार्यालय: प्रेम प्रकाश सन्देश, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ, लश्कर, ग्वालियर-474001
(कार्यालय फोन 0751-4045144 पर सम्पर्क समय प्रातः 8 से 10 बजे तक (तात्कालिक व्यवस्था)

सम्पादक : प्रहलाद सबनानी
प्रबन्ध सम्पादक : शंकरलाल सबनानी